शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-१
अंक-३

माह-सितम्बर २०१८

बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाते अनमोल रत्न

शिक्षा का उत्थान

शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-१
अंक-३

माह-सितम्बर २०१८

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

प्रधान सम्पादक
श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. सर्वेष्ट मिश्र
सुश्री ज्योति कुमारी

सम्पादक
प्रांजल सक्सेना
आनन्द मिश्र

सह सम्पादक
डॉ० अनीता मुद्गल
आशीष शुक्ल

छायांकन
वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन
आनन्द मिश्र

विशेष सहयोगी
शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
पाठकों के पत्र	6
विचारशक्ति	7–8
रोबोट मिसाइल और वैज्ञानिक अविष्कारों को देख बच्चों ने बढ़ाया हुनर	9
मिशन गीत	10
बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न	11–19
निन्दक नियरे राखिए	20–21
टी.एल.एम.संसार	22–23
इंग्लिश मीडियम डायरी	24
शिक्षण गतिविधि	25
नवाचार	26
सद्विचार	27–28
बाल साहित्य	29
बच्चों का कोना	30–31
शीर्षासन	32
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	33–34
माह का मिशन	35
कस्तूरबा विशेष	36
महिला अध्यापकों की चुनौतियां	37–38
सामान्य ज्ञान	39
शिक्षण तकनीकी	40
महत्वपूर्ण दिवस	40
योग विशेष	41–42
खेल विशेष	43–44
मिशन उपस्थिति	45
टीचर्स क्लब कार्नर	46

शुभकामना संदेश

किसी इमारत की बुनियाद कमजोर होती है तो इमारत का भरोसा नहीं होता कि कब ढह जाए। कुछ ऐसा ही शिक्षा के क्षेत्र में भी है। बुनियादी शिक्षा व्यक्तित्व के निर्माण में एक अहम भूमिका निभाती है। एक समय बेसिक शिक्षा अंधकार की ओर मुड़ती ही जा रही थी। लेकिन अब लगने लगा है कि पुनः स्वर्णिम काल आने वाला है और इस स्वर्णिम काल के वाहक बनेंगे वे सभी शिक्षक जो अपनी नौकरी को केवल पैसा कमाने का जरिया नहीं मानते बल्कि देशसेवा का एक अवसर मानते हैं।

मैंने पाया है कि मिशन शिक्षण संवाद ऐसे वाहकों से भरा पड़ा है और नित ऐसे वाहक खोज रहा है। बेसिक शिक्षा को नित नये मुकाम तक पहुँचाने को आतुर ऐसे वाहक इस मंच से एक-दूसरे से बहुत कुछ सीख रहे हैं। ऐसे में मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका का आना एक बहुत ही उत्तम कार्य है। जब मैंने प्रथम बार पत्रिका को देखा था तो इसकी विविधता और उपयोगी स्तम्भों ने मुझे बहुत आकर्षित किया था। दूसरी पत्रिका के आने का मैंने उत्सुकता से इंतजार किया था।

शिक्षकों की इस पत्रिका का अगला अंक अबकि शिक्षक दिवस के आसपास ही आएगा जोकि कौतूहल उत्पन्न कर रहा है। मैं चाहूँगा कि इस पत्रिका का प्रकाशन अनवरत चलता रहे व ये पत्रिका सफलता के नये कीर्तिमान चूमे। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मिशन शिक्षण संवाद को बधाई व शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(मनीराम सिंह)
जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी
गोण्डा

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात

सम्पादकीय

''शिक्षा किसी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की प्रगति और पहचान का मूल आधार होती है'' इस शिक्षा के मूल को मजबूत करने के लिए उर्वराशक्ति का स्रोत होता है एक शिक्षक के शिक्षण संवाद में। मिशन शिक्षण संवाद ने राष्ट्र की प्रगति और पहचान को ''शिक्षण संवाद'' के माध्यम से मजबूत आधार देने की सकारात्मक कोशिश शुरू की है। जिसमें आप सभी की निस्वार्थ, स्वैच्छिक स्वयंसेवी सहभागिता शिक्षा के उत्थान और शिक्षक के सम्मान के लिए जन जागरण का रूप लेती जा रही है। यही कारण है कि टीम मिशन शिक्षण संवाद बिना रुके, बिना थके एक सकारात्मक उत्साह के साथ बेसिक शिक्षा के उत्थान के लिए आप सभी के विचारों और प्रयासों को मूर्त रूप देने की सतत कोशिश करते रहते हैं।

इन्हीं कोशिशों के बीच मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका ''शिक्षण संवाद'' जुलाई–18 से www.missionshikshansamvad.com पर आपसी सीखने–सिखाने के लिए उपलब्ध है। वेबसाइट और ईमेल पर आप सभी की लगातार हो रही प्रेरक प्रतिक्रियाएं, टीम मिशन शिक्षण संवाद के उत्साह को बढ़ाकर लगातार आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान कर रही हैं। इसके लिए मिशन शिक्षण संवाद परिवार आपका आभार प्रकट करता है।

आशा करते हैं कि आप सभी आदरणीय इस सितम्बर–18 के अंक ''शिक्षण संवाद'' को स्वयं पढ़कर, अपने इष्ट–मित्रों को पढ़ने के लिए प्रेरित करके तथा प्रिंट निकलवाकर समाज के विभिन्न सम्मानितों को उपलब्ध कराकर बेसिक शिक्षा के उत्थान का संदेश जन–जन तक पहुँचाने में बढ़– चढ़कर सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सभी पाठकों से प्राप्त प्रतिक्रियाओं, सुझाव और मार्गदर्शन को टीम मिशन शिक्षण संवाद तक अवश्य पहुँचायेंगे।

बहुत–बहुत धन्यवाद!

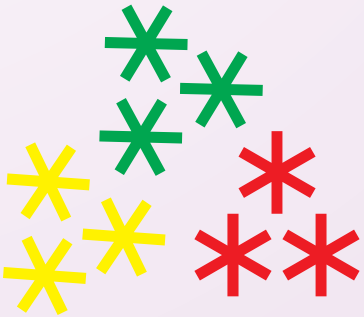

पाठकों के पत्र

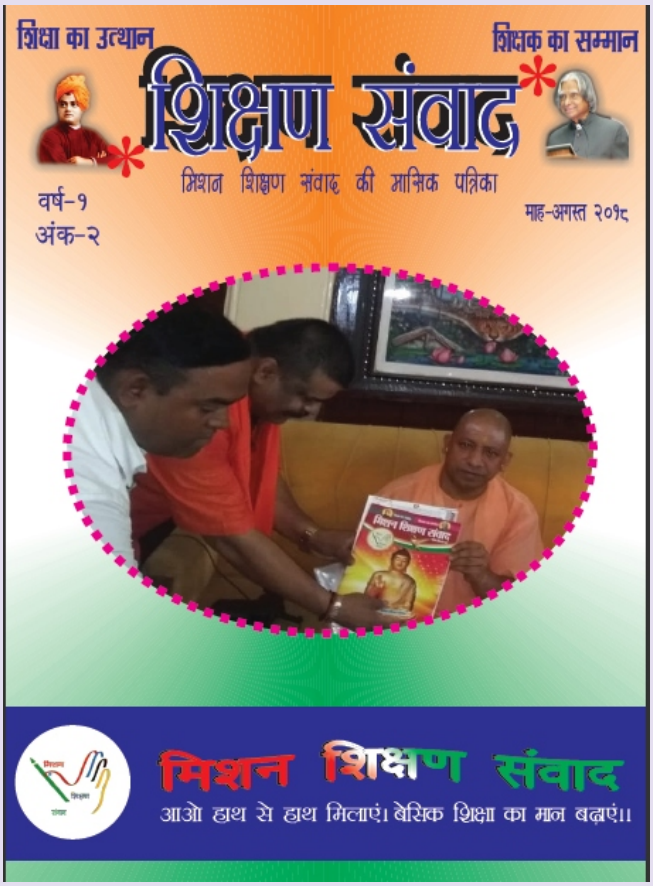

मैंने आज मिशन शिक्षण संवाद की माह अगस्त की मासिक पत्रिका को बहुत ही गहराई के साथ पढ़ा। मुझे इसमें सम्मिलित सभी बिन्दु बहुत ही पसन्द आए। चाहें वो ऑफिसर्स के द्वारा की गयी मिशन के कार्यों की प्रशंसा हो। अनमोल रत्नों के द्वारा किए गये बेमिसाल कार्य, टीएलएम संसार में आरोही–अवरोही क्रम का सुंदर प्रस्तुतीकरण, बालफिल्म करामाती कोट, सदविचार बुद्ध, तिरंगे का महत्त्व, बात अध्यापिकाओं की, 15 अगस्त को ध्यान में रखकर सामान्य ज्ञान के प्रश्न मुझे बहुत पसन्द आये और मुझे सभी से बहुत कुछ सीखने को मिला और आगे बहुत कुछ करने की प्रेरणा भी।

गुलशन जहां,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय कटरा मनेपुर,
ब्लॉक–भाग्यनगर,
जनपद–औरैया।

स्वरांजलि

संगीत एक ऐसी ध्वनि जो इस जगत में सर्वत्र व्याप्त है अगर ध्यान से सुनें तो हवाओं के शोर में, पेड़ों की पत्तियों की सरसराहट में, पक्षियों की चहचहाहट में, नदियों और झरनों के पानी के बहाव में, बारिश की रिमझिम बरसने में, बच्चों की मासूम खिलखिलाहट में भी संगीत है। तो फिर इस आनंद की अनुभूति कराने वाली दैवीय औषधि का उपयोग हमारे बच्चों के शिक्षण में क्यों नहीं है? बच्चों की पाठ्य पुस्तिका में विभिन्न भावों को प्रदर्शित करती अनेक कविताएँ अंग्रेजी, हिंदी व संस्कृत में हैं, परंतु सबसे बड़ी समस्या इन्हें याद करने और कराने में होती है। इस समस्या का निदान इसी संगीत में छिपा हुआ है। जिसे बेसिक शिक्षा के शिक्षकों ने अपना मधुर स्वर देकर जीवंत कर दिया। आज तकनीक के जमाने में तमाम ऐसे माध्यम हैं जिनकी सहायता से आप किसी भी गीत को संगीत दे सकते हैं। मिशन शिक्षण संवाद के सहयोगी शिक्षक भाई–बहनें, मिशन शिक्षण संवाद की टीम के साथ हाथ से हाथ मिलाकर, आधुनिक कम्प्यूटर तकनीकों से शिक्षकों की निस्वार्थ सेवा और सहयोग कर रहे हैं। इन्होंने बेसिक शिक्षा विभाग की पाठ्यपुस्तकों की कविताओं का सुरबद्ध संकलन, स्वरांजलि के नाम से 11 जून– 2018 से शुभारंभ किया है। जहाँ गर्मी की छुट्टियों में अधिकतर शिक्षक साथी अपने परिवार के साथ खुशियों की खोज कर रहे थे। वहीं मिशन शिक्षण संवाद की टीम और उसके सहयोगी शिक्षक भाई बहन शिक्षा के उत्थान के लिए बेसिक शिक्षा के बच्चों के लिए संगीतमय खुशियाँ खोज रहे थे। क्योंकि हम शिक्षकों का दायित्व केवल बच्चों को अक्षर ज्ञान तक ही सीमित नहीं है बल्कि बच्चों के कोमल मन को प्रदूषित होने से बचाने का भी है। आज स्वरांजलि का ही यह प्रभाव है कि अब क्या शिक्षक, क्या बच्चे सभी इन्हीं शैक्षणिक कविताओं को गुनगुनाते हैं। जिसने बच्चों को समाज में प्रचलित अनेकों द्विअर्थी मसालेदार संगीत से बचाकर उनके संस्कारों को सही दिशा देने में सहयोगी की भी भूमिका निभाना शुरू किया है। स्वतंत्रता दिवस पर कई विद्यालयों में इन्हीं कविताओं पर बच्चों ने नृत्य प्रस्तुत किया। बच्चे अब मानसिक भावों को प्रभावित करने वाले गाने नहीं बल्कि बेसिक शिक्षा की शिक्षाप्रद कविताओं को गुनगुनाते हैं। जो हम सबके लिए उपयोगी और प्रेरक पहल साबित हो रही है।

मिशन शिक्षण संवाद के यूट्यूब चौनल पर अब तक 10 से अधिक कविताओं का संकलन हो चुका है। जिसमें कक्षा– 3 की ग्रामश्री को 6K, विमल इंदु की विशाल किरणें 5K, लघु सरिता और हठ कर बैठा कविता को 4K से अधिक लोगों ने देखा और सराहा। मिशन शिक्षण संवाद की टीम का प्रयास लगातार जारी है कि हम सब शिक्षक साथी मिलकर हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी की प्रत्येक कविता और पाठों को संगीतमय बना कर बच्चों के निर्दोष भावनात्मक विकास में सहयोगी बन सकें।

स्वरांजलि में अभी तक की बेसिक शिक्षा की संगीतमय कविताएं

यह लघु सरिता का
https://youtu.be/cx4SZwdQ3C0

विमल इंदु की विशाल किरणें
https://youtu.be/tNL3s958LB0

सरल बने प्रभु सरल बनें
https://youtu.be/YiT-m63jAnM

भारत है मेरा घर
https://youtu.be/us15RxSdpaI

सरस्वती वंदना
https://youtu.be/TXR8kEr96H8

हठ कर बैठा चाँद एक दिन
https://youtu.be/fnZ0Z0HRDLI

काँटों में राह बनाते हैं
https://youtu.be/dBiddxAOGNg

ग्राम श्री
https://youtu.be/1w0g6cb40OA

राष्ट्रीय प्रतीक
https://youtu.be/wJntEsvnBwo

अगर पेड़ भी
https://youtu.be/E5lMrU2tomY

फिर धरती नापी सागर नापी
https://youtu.be/9BqLz_U012E

कहते हैं शिक्षक स्वयं में शिव है, क्योकि उसी के करों में कल्याणकारी विचारधारा व् कर्म छिपे होते हैं। जिन्होंने स्वयं में शिव को ढूंढ लिया वे शिव हो गए अन्यथा शव तो होना ही है।

मिले सुर मेरा तुम्हारा,
तो सुर बने हमारा।

जय हिंद!

शिवम सिंह, स0अ0
प्रा0 वि0 जहुरुद्दीनपुर
सुइथां कला, जौनपुर

रोबोट मिसाइल और वैज्ञानिक अविष्कारों को देख बच्चों ने बढ़ाया हुनर

आदर्श प्राथमिक विद्यालय मूड़घाट बस्ती में मंगलवार को लखनऊ की तकनीक आधारित एक संस्था टेकेक्स इंजीनियर्स के विशेषज्ञों ने बच्चों के सामने रोबोट तकनीक, अंतरिक्ष तकनीक और विभिन्न वैज्ञानिक अविष्कारों का प्रदर्शन किया। जिससे बच्चों की विज्ञान एवं तकनीक की जानकारी बढ़ी और बच्चों ने इससे खूब सीखा और पसन्द किया।

प्रधानाध्यापक डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र ने बताया कि विशेषज्ञ इंजीनियर प्रभात मिश्र ने बच्चों को वैज्ञानिक तकनीकी शब्दवली, इंटरनेट व वैज्ञनिक जागरूकता से संबंधित विभिन्न मॉडलों एवं चित्रों के माध्यम से बच्चों के समक्ष प्रस्तुतिकरण कर उसके बारे में विस्तार से जानकारी दी। इंजीनियर अविनाश भाष्कर ने बच्चों को रॉकेट और रोबॉट के स्वचलित मॉडल दिखाकर उसके बारे में तथा वर्तमान व भविष्य में इस तकनीक के प्रयोग की जानकारी दी। इसके अलावा इंजीनियर प्रशांत मिश्र ने विज्ञान जागरूकता के प्रश्न, कम्प्यूटर के प्रयोग, सेटेलाइट आदि की जानकारी मॉडलों एवं प्रोजेक्टर चित्रों के माध्यम से दिया। कार्यक्रम में बच्चों से विज्ञान एवं तकनीक आधारित प्रश्न भी पूछे गये और बच्चों को डिक्शनरी, कापियाँ और पेन पुरस्कार बाँटे गये। प्रधानाध्यापक डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र ने बताया कि इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन से बच्चों में वैज्ञानिक सोच के विकास के साथ ही उन्हें विज्ञान की दुनिया से अवगत कराने का अवसर मिलता है जो बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है।

कार्यक्रम में विनय चौधरी, शैल यादव, रचना सिंह, एकता सिंह, साक्षी, रविन्द्र, राजमणि यादव सहित अन्य मौजूद रहे।

डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र
प्रधानाध्यापक
आदर्श प्राथमिक विद्यालय मूड़घाट, बस्ती

मिशन गीत

एक जोश था,जुनून था,विचार दे दिया।
शिक्षा और शिक्षकों को एक मुकाम दे दिया।
बनकर दीप जल रहे थे जो अलग अलग।
इनको सजा के एक नया आयाम दे दिया।।

सोई थी अन्तरात्मा झिंझोर सी गयी।
पथ कार्य के जो बन्द थे वो खोल सी गयी।
नित जो नवीन कर रहे प्रयोग दिन–ब–दिन।
कुछ ऐसे नवाचारियों को जोड़ सी गयी।।

होकर के उदासीन कब से सो रहे थे हम।
संसाधनों की दे दुहाई रो रहे थे हम।
पहले मिले विचार फिर मिशन ही बन गया।
इससे मिले प्रकाश को बिखेर रहे हम।।

सहयोग आपसी से चले काम सभी का।
शिक्षा का हो उत्थान बढ़े मान सभी का।
परिवेश, पढ़ाई, प्रचार अन्त मे पॉवर।
है लक्ष्य प्राप्ति का ये चरणबद्ध तरीका।।

आओ चलें मिलकर के सभी संग मिशन के।
दें कार्य को नित धार, नए रंग मिशन के।
हो स्वस्थ,सभ्य राष्ट्र 'पॉजिटिव' की है आशा।
भरते चलो उमंग बढ़ो साथ मिशन के।।।

प्रभात कुमार(पॉजिटिव),
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय महावां
विकास खण्ड–सरसवाँ
जनपद–कौशाम्बी।

बेसिक शिक्षा
के
अनमोल रतन

अनमोल रत्न–1

राजकुमार
प्राथमिक विद्यालय करहेड़ा,
गाजियाबाद

मित्रों आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद की ओर से एक ऐसे अनमोल रत्न शिक्षक साथी से करा रहे हैं जिन्होंने स्वयं अपने को और अपने शिष्यों को अपने कर्त्तव्यों से तपाकर खरे सोने की भाँति विद्यालय से लेकर जनपद, राज्य, राष्ट्र और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक चमक का लोहा मनवाने में सफलता प्राप्त की है।

जहाँ समाज के कुशल आलोचक किसी भी व्यक्ति की समस्त अच्छाईयों को दरकिनार करते हुए कोई न कोई बुराई निकालकर उसके प्रचारक बन ही जाते हैं। लेकिन राजकुमार जी जैसे कुशल कर्मयोगी खेलरत्न ने उनके लिए भी कोई जगह नहीं छोड़ी। आपका चाहे जिला बदला हो, ब्लॉक बदला हो अथवा विद्यालय बदला हो लेकिन जो कभी नहीं बदला वह था आपका अपने कर्तव्यों के प्रति समर्पण और सकारात्मक सोच। जिससे आपने हर स्तर पर एक आदर्श शिक्षक के सम्मान और परिणाम को प्राप्त किया है। जो हम सब के लिए अनुकरणीय एवं प्रेरक है।

आइए देखते हैं खेलरत्न भाई राज कुमार जी प्रेरक प्रयासों कोः–

मेरा नाम – राजकुमार (एम. पी. एड, एन आई एस नेट बॉल C)
प्रथम नियुक्ति 10 दिसंबर 1999 प्राथमिक विद्यालय दिलावरपुर अलीगढ़ सहायक अध्यापक के पद पर हुई नियुक्ति के पश्चात 2000 में बेसिक शिक्षा में शिक्षण करते हुए

भारतीय टेनिस बॉल क्रिकेट टीम का कोच नियुक्त किया। यह टूर्नामेंट भारत व नेपाल के बीच काठमांडू तथा अन्य 4 राज्यों में आयोजित हुआ भारतीय टीम ने 5 टेस्ट सीरीज अपने नाम की 2001 में मेरा अंतर्जनपदीय स्थानांतरण जनपद गाजियाबाद में हो गया मुझे धौलाना ब्लॉक में प्राथमिक विद्यालय करणपुर जट मिला लेकिन व्यायाम शिक्षक के रूप में जनपद स्तर पर बीएसए कार्यालय में रहते हुए कई ब्लॉकों में खेलों का आयोजन कराया गया एवं बच्चों को प्रशिक्षण दिया गया जिसमें मेरी भूमिका अहम रही और खेल कराने का अनुभव प्राप्त हुआ 2003 में मेरा स्थानान्तरण प्राथमिक विद्यालय गढी कटैया लोनी में हो गया यहाँ सहायक अध्यापक के साथ–साथ ब्लॉक लोनी के व्यायाम शिक्षक के रूप में कार्य करने को मिला मेरे विद्यालय की स्थिति इतनी दयनीय थी कोई चार दीवार नहीं कोई पौधे नहीं, कोई पेड़ नहीं लेकिन खेल का मैदान बहुत था। मैंने NGO द्वारा विद्यालय की चारदीवारी प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय में 400 पौधे समरसेबल खो–खो पोल लकड़ी बॉलीवाल के लोहे के पोल स्थाई रूप से भारत इलेक्ट्रॉनिक्स प्राइवेट लिमिटेड के माध्यम से लगवाये गये जिसके कारण विद्यालय की छवि स्पोर्ट्स स्कूल की तरह हो गई व्यायाम शिक्षक होने के कारण ब्लॉक लोनी के बहुत सारे विद्यालय में खेल का सामान उपलब्ध कराया गया तथा NGO के माध्यम से वितरित किया गया। कुछ विद्यालयों ने क्रीड़ा शुल्क से खेल का सामान खरीदा गया प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय बैहटा, प्राथमिक उच्च प्राथमिक विद्यालय बन्थला, प्राथमिक उच्च प्राथमिक विद्यालय लोनी, पूर्व माध्यमिक विद्यालय टीला अफजलपुर लगभग 25 से 30 विद्यालय में खेल की सामग्री खरीदी गई जिसके कारण लोनी ब्लॉक 2003 से लेकर 2010 तक गाजियाबाद जनपद में प्रत्येक वर्ष चैंपियन रहा जिसमें विभिन्न कार्यक्रमों जनपद मंडल एवं राज्य स्तर पर गढ़ी कटैय्या के बच्चों ने प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किए कई मंत्रियों द्वारा विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया शिक्षा मंत्री, श्री किरन पाल जी कृषि मंत्री श्री राजपाल जी खेल मंत्री, उमा भारती जी, जनपद के जिलाधिकारी श्री संतोष यादव जी ने बच्चों को भी सम्मानित किया। विद्यालय में कोई चारदीवारी नहीं कोई पौधे नहीं कोई पेड़ नहीं लेकिन खेल का मैदान बहुत था। NGO द्वारा विद्यालय की चारदीवारी प्राथमिक विद्यालय में 400 पौधे समरसेबल NGO के माध्यम से किया गया।

इसी बीच 2004 में मानसिक एवं कमजोर मंदबुद्धि बच्चों को स्पेशल ओलंपिक कोलकाता में आयोजित किया गया। 1 महीने का प्रशिक्षण मेरे द्वारा बरेली स्टेडियम में विकलांग बच्चों को फुटबॉल एवं विभिन्न खेलों का प्रशिक्षण दिया गया। मुझे उत्तर प्रदेश टीम का कोच बनाया गया मुझे उत्तर प्रदेश के विकलांग बच्चों को तैयार करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और टीम को लेकर कोलकाता गया वहाँ फुटबॉल टीम ने कांस्य पदक तथा जूनियर टीम ने गोल्ड मेडल प्राप्त किया इस खुशी में टीम के लौटने पर गाजियाबाद रेलवे स्टेशन पर बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री विनय कुमार गिल द्वारा स्टेशन पहुँचकर बच्चों और कोच का स्वागत किया आगे भी भविष्य में और अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

2004 में मैं भारतीय नेटबॉल टीम का कोच नियुक्त किया इंडिया टीम का प्रशिक्षण चेन्नई में प्रारंभ हुआ। 1 महीने के प्रशिक्षण के बाद भारतीय टीम कोलंबो श्रीलंका के लिए रवाना हुई फोर्थ एशियन यूथ नेट बॉल चौंपियनशिप में भारतीय टीम का उम्दा प्रदर्शन रहा। इससे पहले राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय नेटबॉल चौंपियनशिप मैं अंपायरिंग करने का कई बार मौका मिला मैंने पाकिस्तान, इंडिया, इंग्लैंड, सिंगापुर, थाईलैंड, मलेशिया, मालदीप, हॉन्ग कॉन्ग, श्रीलंका आदि देशो के मैच खिलाने को मिले। दिल्ली 2010 में 19 कॉमनवेल्थ गेम्स में 7जी एशियन यूथ चौंपियनशिप त्याग राज स्टेडियम दिल्ली में आयोजित की गई जिसमें ऑफशिफ्टिंग करने का

मौका मिला।

राष्ट्रीय राज्य स्तरीय चैंपियनशिप में कई बार फाइनल मैच खिलाने का मौका मिला तथा नेशनल में दिल्ली एवं यूपी टीम के कोच के रूप में कई वर्षों तक प्रशिक्षण देता रहा।

जुलाई 2011 में ग्रामीण क्षेत्र से नगर क्षेत्र गाजियाबाद में नियुक्ति हुई। मैंने प्राथमिक विद्यालय करहेड़ा में सहायक अध्यापक के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया लेकिन विद्यालय की स्थिति इतनी खराब थी कि बच्चों की उपस्थिति 30 40 परसेंट ही रहती थी। मैंने विद्यालय में NGO के माध्यम से 8 शौचालय 20 बाई 30 की, मंच प्रार्थना करने के लिए मंच पीने के पानी की अंडरग्राउंड फिटिंग NGO के माध्यम से खेल का पूर्ण सामान, खो खो के पोल वॉलीबॉल के पोल, खेल का सामान, योगा की ड्रेस, सरस्वती वंदना की ड्रेस, डांस की ड्रेस, विद्यालय में दो समरसेबल, 100 पौधे प्रार्थना स्थल पर, म्यूजिक से प्रार्थना, म्यूजिक सिस्टम, झूले, चार्ट, रंग रोगन, युवा के पोस्टर, स्मार्ट बोर्ड की व्यवस्था कराई गई। विद्यालय में एक ही प्रांगण में 3 विद्यालय संचालित थे। तीनों की प्रार्थना अलग–अलग होती थी जब मैंने एक जगह प्रार्थना कराना शुरू की काफी दिक्कत हुई और कई दिनों तक प्रार्थना स्थल पर अकेले ही प्रार्थना कराई। कई बार दोबारा से अलग–अलग प्रार्थना कराने को कहा लेकिन मैंने हिम्मत नहीं हारी और अकेले ही जो मंच मैंने बनवाया था उसके माध्यम से तथा म्यूजिक सिस्टम के द्वारा प्रार्थना करता रहा। एक समय ऐसा आया तीनों विद्यालयों के अध्यापक अपने आप धीरे–धीरे सहयोग करने लगे और उनमें रुझान पैदा हुआ लेकिन रूचि उनके अंदर खेलों में बिल्कुल नहीं थी जब सहयोग नहीं मिला तो मैंने विद्यालय से बाहर जाकर जो बच्चे उबड़–खाबड़ ग्राउंड में खेलते थे वहाँ से छोटे–छोटे बच्चे स्कूल में लेकर आया और उन बच्चों को योगा कराना प्रारंभ किया और मुझे योगा की टीम बनाने में छह–सात महीने लगे जैसे–जैसे बच्चों में इंटरेस्ट आना शुरू हुआ। वैसे–वैसे विद्यालय की उपस्थिति में इजाफा हुआ और बच्चों की संख्या 90: से सौ परसेंट होने लगी। स्कूल में जब मैंने तीनों विद्यालय की प्रार्थना एक जगह शुरू की तो कुछ कठिनाइयाँ आयीं। लेकिन समय के साथ–साथ परिवर्तन होता रहा और विद्यालय के बच्चों ने योग अपना एक नया विषय बनाया। जिला मंडल एवं राज्य स्तर पर कई बार प्रथम द्वितीय तृतीय स्थान प्राप्त किया।

प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक करेहंड़ा की योगा टीम ने लगातार 3 वर्ष तक द्वितीय तृतीय स्थान प्राप्त किया मंडल, जनपद स्तर पर 15 अगस्त 26 जनवरी सांस्कृतिक कार्यक्रम, मतदाता दिवस, चेक वितरण समारोह, कचरा समाधान अन्य कार्यक्रमों में प्रतिभाग कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। मुझे वर्ष 14–15 एवं 15–16 में जनपद गाजियाबाद बेस्ट टीचर अवार्ड से सम्मानित किया गया मुझे जिलाधिकारी श्री रंगा राव जी श्रीमती अर्पणा उपाध्याय, श्रीमती निधि केसरवानी जी, श्रीमती मिनिस्ती जी, वर्तमान में श्रीमती रितु माहेश्वरी जी एवं कमिश्नर मेरठ मंडल श्री प्रभात जी एवं कमिश्नर आगरा श्रीमती डॉक्टर शिखा दरबारी, खेल मंत्री चेतन चौहान जी, श्री अनिल अग्रवाल जी, सांसद श्री भोला जी, सांसद माननीय सांसद रामगोपाल जी आदि द्वारा कई बार सम्मानित किया गया। मेरे विद्यालय के प्राथमिक योगा टीम में 26 जनवरी 2014 को माननीय जेल मंत्री श्री राजेंद्र चौधरी द्वारा 21000 कोच के लिए और 21000 योगा टीम के लिए धनु राशि से पुरस्कृत किया मुझे एवं मेरे बच्चों को 2017 में हिंदू आध्यात्मिक मेला नृत्य प्रतियोगिता मैं 25,000 की धनराशि इनाम के रूप में जीती

विज्ञान महोत्सव पुलिस लाइन हरसाव में पूर्व राष्ट्रपति आदरणीय अब्दुल कलाम जी द्वारा बच्चों को सम्मानित किया गया।

अनमोल रत्न–2

श्वेता सिंह
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय हरिहर नगर,
बेरुआरबारी, जनपद– बलिया

मैं श्वेता सिंह सहायक अध्यापक प्राथमिक विद्यालय हरिहर नगर, बेरुआरबारी, जनपद– बलिया से। मैंने 30 अगस्त 2016 को प्रा0वि0 हरिहर नगर में बतौर सहायक अध्यापिका कार्यभार ग्रहण किया। बहुत ही सीमित संसाधनों वाले इस विद्यालय में एक प्रधानाध्यापक(महिला), एक समायोजित शिक्षिका, तीन रसोईया और 200 बच्चे मुझे विरासत में मिले। विद्यालय में नामांकित बच्चों की संख्या कम नहीं थी।

पहले दिन कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात मैं अपने स्वाभाव के कारण बच्चों से जल्दी ही घुल मिल गयी। इसमें मेरे मोबाइल का भी योगदान रहा। बच्चों के साथ तस्वीरें लीं। बच्चे इन सब से बहुत ही खुश थे। बच्चों से बातचीत में मुझे पता चल चुका था कि ''बहुत कठिन है डगर पनघट की'' मेरे मन से आवाज आयी, ''रास्ते कठिन हैं तो मैं भी आसान नहीं मुश्किलों के लिए, मुश्किलों के लिए भी कठिन होगा मुझे हरा पाना'' फिर मैंने अपनी ऊर्जा को समेटा और चलने के लिए तैयार हो गयी कठिन रास्तों पर।

मैंने कई दिनों तक करिकुलम को छुआ तक नहीं, सिर्फ और सिर्फ बच्चों से जुड़ने का प्रयास किया ताकि मुझे पता चल सके कि मेहनत कहाँ से शुरू करनी है। मेरा अनुभव ये है कि आप संसाधनों की कमी के बावजूद शिक्षण कर सकते हैं। लेकिन बच्चों से बिना आत्मिक जुड़ाव के आपके लिए शिक्षण मुश्किल होगा। बच्चों से जुड़ाव आपको हर दिन नई ऊर्जा से भर देगा और नवाचारों के लिए प्रेरित करेगा।

पहली सीख, पहला भरोसा, पहली उम्मीद–

1 सितम्बर 2016 को सुबह प्रार्थना के पश्चात मैंने बच्चों को एक्सरसाइज कराना शुरू किया, तभी एक बुजुर्ग रसोईया दादी ने आकर मुझसे कहा कि ''आप कभी बदलना मत'' उनका इतना कहना था कि कई सवाल मेरे दिमाग में घूम गये कि क्यों न बदलूँ, मैं तो हर रोज बदलना चाहती हूँ? हर रोज पहले से बेहतर बनना चाहती हूँ, मैंने अपने विचारों पर काबू करते हुए पूछा कि ऐसा क्यूँ लग रहा है आपको? उन्होंने कहा कि मैं यहाँ बहुत दिनों से काम कर रही हूँ लेकिन अभी तक आपके जैसा कोई नहीं आया, जिसने ये सब किया हो। तब मैंने उनकी आँखों में अपने लिए एक भरोसा और उम्मीद देखी। मैं उनसे ये वादा तो नही कर पायी कि मैं बदलूँगी नहीं लेकिन हाँ ये वादा जरूर किया उनसे और स्वयं से कि मेरा बदलाव विद्यालय व बच्चों के हित में होगा और हर दिन गुजरे दिन से बेहतर होगा।

विद्यालय में पहला शिक्षक दिवस–

5 सितम्बर 2016 विद्यालय में मेरा शिक्षक के रूप में पहला शिक्षक दिवस था। उस दिन मैंने 2 पौधे खरीदे और बच्चों के साथ मिलकर हमारे हरियाली से महरुम आशियाने में हरियाली रोंप दी। बच्चों को प्लांटेशन के फायदे और शिक्षक दिवस के बारे में बताया तथा साथ मिलकर और भी पौधे लगाने का प्रण लिया।

पहला गणतन्त्र दिवस(जब गाँव वालों से मिला स्नेह व सराहना)–

ये मेरा दूसरा टर्निंग पॉइंट था। हमारे कार्यक्रम ने विद्यालय के ही पिछले सारे रिकार्ड्स तोड़ दिए। इसमें बच्चों का सहयोग सराहनीय रहा। इस कार्यक्रम में तथा कार्यक्रम के बाद गाँव वालों से खूब सराहना तथा प्रेरणा मिली।

विद्यालय की पहली नकल विहीन परीक्षा–

19 अक्टूबर 2016 को विद्यालय के हाफ ईयरली एक्जामिनेशन में पहली बार नकल विहीन परीक्षा की नींव पड़ी जिसमें बच्चों को सीटिंग प्लान के अनुसार बैठाया गया।

समस्याएँ–

बच्चों में अभिव्यक्ति क्षमता की कमी।

बच्चों का कक्षा में रुचि न लेना।

स्वस्थ प्रतियोगिताओं का अभाव।

को कॅरिकुलर एक्टीविटीज का अभाव।

जेंडर इक्वलिटी का अभाव।

परीक्षा प्रणाली का कमजोर होना।

बच्चों का दैनिक क्रियाओं(ब्रश करना, नहाना आदि) के प्रति जागरूक न होना।

प्रयास एवं परिणाम–

प्रार्थना के पश्चात बच्चों से योगाभ्यास कराना।

योगासन के पश्चात बच्चों से सामान्य जानकारियों के प्रश्न पूछना तथा उन्हें नई जानकारियाँ देना।

बच्चों को दैनिक क्रियाकलाप के प्रति जागरूक करने के लिए वीडियो दिखाना तथा समय समय पर पुरस्कृत करना जिससे बहुत हद तक सुधार हुआ।

बच्चों की रुचि बढाने के लिए विषयानुसार मास्क एवं पपेट्स का प्रयोग करने से बच्चों की रुचि बढ़ी।

बच्चों में नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए कुछ डब्बे बच्चों की सहायता से बनाये जिनमें किसी का सामान गिरा मिलने पर रखने की प्रकृति तथा कचरे को इधर उधर फेंकने के बजाय डब्बे में रखने की आदत को प्रेरित किया। इससे बच्चों में ईमानदार व व्यक्तिगत जीवन शैली का विकास हुआ।

जो बच्चे पूरे दिन में अपना बेस्ट दें, उनके साथ सेल्फी लेना। सेल्फी से बच्चे खुश होते और अच्छे बच्चे बनने की कोशिश करते।

शनिवार को क्राफ्ट, बाल सभा, जीके गेम्स तथा खेलकूद का आयोजन किया जाता, इससे बच्चों की रचनात्मकता बढ़ी।

बच्चों की रुचि बढाने के लिए रोल प्ले मेथड का प्रयोग किया। इससे बच्चों की समझ के साथ अभिव्यक्ति तथा मंचन क्षमता भी बढ़ी।

बच्चों की विज्ञान में रुचि बढाने के लिए एक्सपेरिमेंटल मेथड का प्रयोग किया। इस विधि से बच्चे रुचि और समझ के साथ विज्ञान से सम्बंधित टीएलएम बनाने की क्षमता का विकास हुआ।

बच्चों में इंग्लिश की समझ बढाने के लिए चुने हुए बच्चों के लिए सेशन विथाउट पेपर पेंसिल चलाया तथा प्रत्येक बच्चे को 5–5 बच्चों को सिखाने को कहा। इसके बहुत ही अच्छे परिणाम प्राप्त हुए। मुझे मेहनत भी कम करनी पड़ी और बच्चों को सीखने के साथ सिखाना भी आ गया।

जेंडर इक्वलिटी को बढ़ावा देने तथा बच्चों को जागरूक करने के लिए समय–समय पर

अवेयरनेस सेशन का आयोजन किया तथा एक्टीविटीज के दौरान ब्वायज गर्ल्स का कम्बाइंड ग्रुप बनाकर एक्टीविटीज करने तथा समय–समय पर प्रेरित किया। इसके परिणामस्वरूप बच्चे साथ मिलकर कार्य करना पसन्द करते हैं तथा एक स्वस्थ परिवेश बना रहता है।

विशेष दिवसों को मनाना तथा उसके बारे में बताना।

महापुरुषों के जन्मदिन पर बच्चों को उनका प्रतिरूप बनाना तथा नाटिका, वीडियोस, चित्रकला के माध्यम से उन्हें जानकारी देना।

बच्चों को सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए प्रेरित करना।

कक्षा में आईसीटी का प्रयोग।

समय समय पर प्रतियोगिताओं का आयोजन तथा बच्चों को पुरस्कृत करना।

टीएलएम का प्रयोग।

क्षेत्र भ्रमण।

समय समय पर विशेषज्ञों को आमंत्रित करना।

अभिभावक सम्पर्क।

बच्चों के साथ मिलकर प्लांटेशन करना।

बाल केंद्रित शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए बच्चों को आपने आप उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया तत्पश्चात उसने सुधार किया।

बच्चों द्वारा लगाई गणित विज्ञान प्रदर्शनी में मिली सराहना–

बच्चों ने शिक्षा उन्नयन गोष्ठी में गणित विज्ञान प्रदर्शनी लगाई,जिसे खूब सराहना मिली। इसमे किडनी, लंग्स, प्रोजेक्टर, वाटर पम्प आदि के वर्किंग मॉडल्स के साथ कंकाल तंत्र, पाचन तंत्र,

सोलर सिस्टम, जलने के लिए ऑक्सीजन की आवश्यकता, जोड़ मशीन, संख्या मशीन इत्यादि मॉडल्स बच्चों ने आदरणीय जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी महोदय, जननायक श्री चंद्रशेखर विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय और वहाँ उपस्थित लोगों के सामने डेमोस्ट्रेट किये। बच्चों की मेहनत से खुश होकर ब्लॉक अध्यक्ष, मंत्री जी एवं सम्मानित सदस्यों ने विद्यालय आकर बच्चों को पुरस्कृत किया।

मेरे शिक्षण अधिगम का आधार–

मेरे कक्षा शिक्षण का बेस कोई नवाचारी तकनीक नही बल्कि एक बेसिक सी चीज है, जो ह्यूमन को ह्यूमन बनाती है। प्रेम, लगाव, बच्चों के साथ बॉन्डिंग, जहाँ बच्चे खुद को महफूज समझते हैं। फिर उस बॉन्डिंग की नींव पर मैं करिकुलर और को करिकुलर एक्टीविटीज में इनोवेशन्स के महल बनाती हूँ।

एक और बेसिक टेक्निक जो मैं अपनी टीचिंग के दौरान इस्तेमाल करती हूँ। मॉम्स मैजिक, ये मेरी टीचिंग का खास पहलू है। हम सबने महसूस किया है, अपने घरों में जिस दिन हमें खाने का मन नही होता माँ कितने सारे ऑप्शन्स देती है और उनके ऑप्शन्स तब तक खत्म नही होते जब तक हमारा खाने का मन न हो जाये।

मेरे अनुभव एवं सुझाव–

हमारी टीचिंग लर्निंग की प्रभाविता इस बात पर निर्भर करती है कि हम आपनी नजर और नजरिए को कितनी अपडेट रखते हैं। हमने क्लासरूम टीचिंग की जो भी प्लानिंग की है उसे तो हम बतायें ही साथ ही बच्चों की मानसिक स्थिति और सामाजिक परिस्थितियों और समय की माँग के अनुसार बच्चों की लर्निंग करायें, क्योंकि इस समय जो बच्चे सीखेंगे वो हमारी प्लानिंग की लर्निंग से ज्यादा इफेक्टिव होगा।।

मेडिसिन्स की एक्सपायरी चेक करना मैंने बच्चों को तब सिखाया जब कक्षा का एक बच्चा बीमार था। दवाई के बारे में पूछने पर उसने पुराने कवर वाली दवाई जेब से निकलते हुए कहा कि पापा बीमार थे तब लाये थे और आपको जानकर आश्चर्य होगा जैसा मुझे हुआ था कि एक साल बाद फस्ट एड पर चर्चा के दौरान पता चला कि वो एक्टिविटी बच्चों को याद थी।

गोरखपुर में चालक की लापरवाही के कारण स्कूल वैन और ट्रेन दुर्घटना में बच्चों की मौत के बाद अपनी कक्षा में बच्चों को सड़क सुरक्षा के बारे में मास्क बनाकर हिंदी तथा इंग्लिश राइम्स के माध्यम से जागरूक करने का प्रयास किया।

सम्मान–

30 सितम्बर 2016 डारेक्टर सर द्वारा प्रमाणपत्र प्राप्त हुआ।

30 दिसम्बर 2016 को डिस्ट्रिक्ट लेवल क्वालिटी एजुकेशन सेमिनार में बीएसए सर से प्रमाणपत्र तथा स्मृति चिन्ह प्राप्त हुआ।

शिक्षा में विशिष्ट योगदान हेतु 3 अप्रैल 2017 को बीएसए सर द्वारा स्मृति चिन्ह तथा सम्मान प्राप्त हुआ।

14 मई 2017 को उच्च प्राथमिक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता सम्पन्न कराने में योगदान हेतु स्मृति चिन्ह एवं प्रमाणपत्र प्राप्त हुआ।

15 अप्रैल 2018 शिक्षा उन्नयन गोष्ठी में श्री चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय और जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी महोदय द्वारा स्मृति चिन्ह एवं प्रमाणपत्र प्राप्त हुआ।

मिशन शिक्षण संवाद काशी शैक्षिक उन्नयन कार्यशाला में आयुक्त वाराणसी मण्डल द्वारा प्रमाणपत्र प्राप्त हुआ।

समय समय पर मेरे कार्यों को e news के माध्यम से प्रोत्साहन तथा सराहना मिली।

अनमोल रत्न–3

सुरेन्द्र प्रताप सिंह
PS नगला डरु बिल्टीगढ़,
हथवन्त, फिरोजाबाद

सर यह सभी परिवर्तन मेरे द्वारा किए गए हैं उसके लिए मैंने अपना तन, मन, धन और समय लगाया। जिसके लिए मैंने सबसे पहले विद्यालय का भौतिक परिवेश बदला। जो समाज, अभिभावकों के लिए पहला आकर्षण होता है। उसके लिए बगीचा लगवाया
विद्यालय में सबमर्सिबल, पानी की टंकी लगाकर पाइप लाइन से बच्चों को पानी उपलब्ध कराया।
विद्यालय के कमरों में कारपेट बिछवाना फर्नीचर बनवाना।
व्हाइट बोर्ड लगवाना। कंप्यूटर के द्वारा टीचिंग प्रोजेक्टर का उपयोग करना। कक्षा में शिक्षण अधिगम सामग्री बनाना। विद्यालय में परिचय पत्र स्कूल डायरी और पुस्तकालय चलाना, इत्यादि काम मेरे द्वारा चलाए गए।

मेरे स्कूल में छात्र संख्या जो नामांकित है
2014 –15 : 70,
2015 –16 : 105,
2017– 18 : 130
2018– 19 : 138 हो चुके हैं।

उसके अलावा मेरे द्वारा विद्यालय में प्रतियोगिता करवाया जाता है उसमें एक अंग्रेजी अंत्याक्षरी, निबंध लेखन, लेखन प्रतियोगिता इत्यादि इन सब से बच्चों का शैक्षिक लेवल बढ़ा एवं विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति प्रतिदिन 120 तक रहती है।

मेरे विद्यालय में पिछले वर्ष प्रधानाध्यापक व अध्यापक थे, जबकि जो शिक्षामित्र थे। मेरे विद्यालय में किए गए इस कार्य में तिलक सिंह शिक्षामित्र का भी अपूर्व योगदान रहा। बाकी मैं अपनी कहानी अपने मुँह से नहीं कहना चाहता। आप स्वयं गाँव या विद्यालय में आकर उसका निरीक्षण कर सकते हैं।

निन्दक नियरे राखिए

तैयारी जोरों पर थी, सारा सेट–अप कर लिया गया था, सभी कलाकार भी तैयार थे लेकिन प्रश्न यह था कि किसका हाथ नहीं हिलता है या फिर कम हिलेगा। मुख्य कलाकार यद्यपि सधे हुए हाथ से यह कर सकता था लेकिन उसे तो मुख्य भूमिका निभाते हुए पूरे समय सामने ही रहना था। सामने रहकर ही तो वह सितारों की मेनस्ट्रीम में पहुँचेगा न। अब मामले को कुछ यूँ एक्सप्लेन करते हैं। खतों–किताबत के दौर में न जाने कितने टैलेंट, लोकल स्तर तक ही नाम कमा के शांत हो गए लेकिन टेक्नोलॉजी के आम जनमानस के बीच तक पहुँच बना लेने से टैलेंट्स के पास अब खुद के प्लेटफार्म्स उपलब्ध होने लग गए हैं। कुछ ऐसे ही टैलेंट्स हमारी बेसिक शिक्षा में भी हैं जिन्होंने अपनी मेहनत और टेक्नोलॉजी से नजदीकी के बलबूते प्रदेश और राष्ट्रीय स्तर तक अपना और अपने विद्यालय का नाम रोशन किया। यूट्यूब और फेसबुक पर ऐसे विभिन्न शिक्षकों के स्कूल्स और उनकी शिक्षण विधियों के वीडियोज उपलब्ध हैं। नवाचारी व्यवस्था के ये दैदीप्यमान प्रकाश पुंज अपनी ऊर्जा से अधिकाधिक शिक्षकों को ऊर्जित कर रहे हैं। न केवल शिक्षण की विधाओं को मूर्धन्य बनाने और प्रेरणा देने के लिए बल्कि साथ ही ऐसे ही वीडियोज बनाने और उन्हें अधिकाधिक लोगों के बीच पहुँचाने के के लिए भी।

लेकिन जब कुछ ऊर्जित शिक्षक केवल वीडियोज बनाकर अपलोड करने के लक्ष्य के साथ ही ऐसा कर रहे होते हैं तो ऐसा ही दृश्य सुलभ होता है। शुरुआत एक बार फिर से करते हैं, अब शायद शुरुआत ज्यादा स्पष्ट हो जाएगी।तैयारी जोरों पर थी (किस किस एंगल से वीडियो शूट किया जाएगा?), सारा सेट–अप कर लिया गया था (बोर्ड पर चित्र बना लिए गए थे, कुछ बच्चों को डायलॉग्स प्रोपरली याद करा दिए गए थे। किससे कब क्या पूछना है समझा दिया गया था, सभी कलाकार (शिक्षक एवं बच्चे) भी तैयार थे लेकिन प्रश्न यह था कि किसका हाथ नहीं हिलता (कौन सा बच्चा कैमरा पकड़ने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है?) है या फिर कम हिलेगा। मुख्य कलाकार (शिक्षक) यद्यपि सधे हुए हाथ से यह कर सकता था लेकिन उसे तो मुख्य भूमिका निभाते हुए पूरे समय (कैमरे के) सामने ही रहना था।

आज ज्यादातर ऐसे वीडियोज, नवाचारी शिक्षण विधियों के नाम पर बनाए और अपलोड किये जाते हैं। लेकिन सत्यता तो ये है कि ऐसा वीडियो बनाये जाते समय, न तो उस जगह पर (जिसे हम क्लासरूम कहते हैं) कोई शिक्षक होता है न शिक्षार्थी, अगर होते हैं तो केवल कलाकार, सेट और कैमरामैन। इंटरनेट से आवश्यक कंटेंट ढूंढकर वीडियोज बनाना फिर उन्हें एडीटिंग एप के माध्यम से आकर्षक बनाना फिर अपलोड करके वाह–वाह बटोरना, इस क्रम में नवाचारी शिक्षण विधाएँ अपना मूल्य खो देती हैं।

शुरुआती तौर पर जिन स्कूल्स को आपने राज्य स्तर पर ख्याति प्राप्त करते कभी किसी वीडियो में देखा होगा, उन स्कूल्स में शिक्षक ने पहले स्वयं को शिक्षक, बच्चों को शिक्षार्थी और इमारत को स्कूल बनाया होगा तब कहीं जाकर वीडियो बनाने का नम्बर आया होगा। बदलती हुई सरकारों के साथ, बेसिक शिक्षा के दिखावटी और खुश कर देने वाले सर्वे प्रमुखता से किये जाते रहे हैं। सम्प्रति कागजी प्रपत्रों का भार कुछ कम हुआ है क्योंकि इंटरनेट और सोशल

मीडिया के इस दौर में कागजों पर की जाने वाली कसीदाकारी को अब पिक्स और वीडियोज ने प्रतिस्थापित करना शुरू कर दिया है। शासन और प्रशासन भी केवल दिखावटी साज सज्जा से ही अपनी पीठ ठोंकना चाहता है। अभी हाल में ही पूरे प्रदेश भर से स्कूलों की पिक्स अपलोड करने का फरमान जारी हुआ था जो वर्तमान में भी जारी है। भौतिक सत्यापन की आवश्यकता बताई तो जाती है लेकिन अमल में लाने की आवश्यकता ही क्यों, अगर काम केवल दिखावट से ही चल जाये और शाबासी भी मिल जाए इसी ट्रेंड को समझते हुए ही अधिकांश शिक्षक बंधुओं ने भी ''तुम डाल–डाल , हम पात–पात'' लागू कर दिखावटी गुणवत्ता भी हासिल कर ली और नवाचारी अभिनय भी परवान चढ़ गया। ध्यान दें यहाँ अभिनय कहा गया है, अभियान नही।

वीडियो को शूट करते समय केवल इस बात का ध्यान रखा जाता है कि वह वीडियो देखते समय लोगों की ऊँगलियाँ उनके दाँत के नीचे बरबस दब जाएँ। भले ही इस पूरी प्रक्रिया में बच्चों के अधिगम के स्तर पर कोई भी ध्यान न दिया गया हो, वह चलेगा । यद्यपि यह स्थिति सभी स्कूल्स या शिक्षकों के लिए बराबर से लागू नहीं है लेकिन शुरूआती 'ओरिजिनल' के बाद से ज्यादातर 'चाइनीज माल' ही आपको दीगर होगा। जिन शिक्षक बंधुओं ने बच्चों को ही अपनी पूँजी, विद्यालय को ही अपना कर्मक्षेत्र व मंदिर और स्वयं को सरकारी नौकर के बजाय शिक्षक समझा और दिन–रात मेहनत की, उन्होंने पहले स्कूल की बिल्डिंग को विद्यालय का स्वरूप दिया। फिर बच्चों को तराशने का काम अंजाम दिया और गुणवत्ता पैदा की तब कहीं जाकर लोगों को खुद से जोड़ने की मंशा से वीडियोज बनाये। उन्हें सराहना मिली और उन्हें प्रादेशिक स्तर पर जाना जाने लगा। उन्हें सम्मान भी मिला और नाम भी। लेकिन 24 घंटे स्मार्टफोन से लैस कुछ सरकारी कर्मचारियों ने इसे वीडियोज का ही कमाल समझ लिया और बनाने लग गए अधिकाधिक आकर्षक वीडियोज। आवश्यकता है कि पहले खुद में शिक्षक को जगह दी जाए, स्कूल के परिवेश को समृद्ध किया जाए और बच्चों में संस्कार के साथ–साथ गुणवत्ता को उगाया जाए तब कहीं जा कर वीडियोज अपलोड किए जाएँ।तो छोड़िए ये निर्माता–निर्देशक बनने का नशा, पहले बच्चों को संस्कारयुक्त और गुणवत्तायुक्त छात्र बनाइए और तब उनके हाथों में कैमरा भी कभी न हिलेगा और किसी एंगल से वीडियो शूट किया जाना चाहिए, वह खुद ही डिसाइड कर सकेंगे। आपको भी 'थियेटर सा माहौल' बनाने की कोई आवश्यकता न होगी।

गाँव–गाँव टावर लगे, हर घर में है फोन
टीचर भी स्मार्ट हैं,भला पढ़ाये कौन?
संकुल भी अब चाहते,सूचित होंय तुरंत
पेन, कागज और दौड़ का,भले हुआ है अंत
शासन सेल्फी माँगता,बच्चे फल के साथ
शिक्षक राह तलाशता,बस उसकी हो बात
विद्यालय अब बन रहे ,बॉलीवुडिया सेट
बच्चे दर्शक बन गए,हीरो बन गए हेड

सुधांशु श्रीवास्तव
प्रधानध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय घसिला का डेरा
खजुहा, फतेहपुर
वर्तमान में एबीआरसी(अंग्रेजी),
ब्लॉक खजुहा
फतेहपुर।

टेबल फैन

TLM का नाम– टेबल फैन

कक्षा– 1, 2

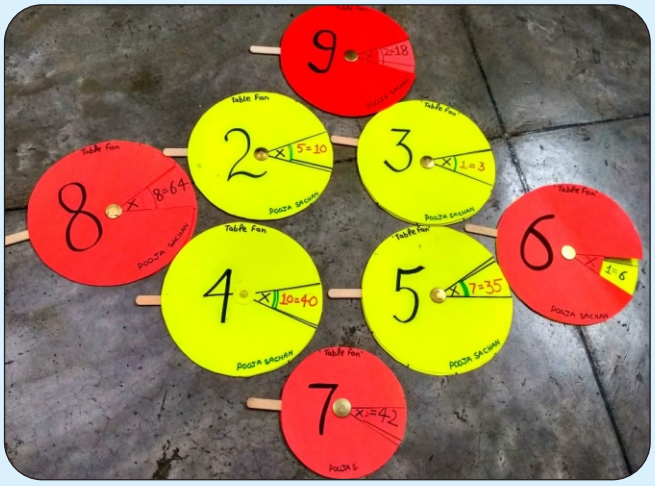

TLM वर्णन – प्रस्तुत TLM को कक्षा 1 एवं 2 के बच्चों को पहाड़ा याद कराने हेतु तैयार किया गया है किंतु इस TLM का नामकरण रोचक ढंग से किया गया है जो कि यथो नाम तथो गुण को साकार करता हुआ है।

पहाड़ा (TABLE)याद कराने के लिए बनाये गये इस TLM का आकार एक हाथ के पंखे की तरह होने के कारण इसका नाम टेबल फैन ही उपयुक्त है।

आवश्यक सामग्री– चार्ट पेपर, आइसक्रीम स्टिक, कैंची, फेविकोल, स्केच पेन इत्यादि।

बनाने की विधि – रंगीन चार्ट पेपर को एक आकार के गोल आकृति में कैंची की सहायता से काट लेते हैं। एक स्टिक में दो कटे गोल पेपर पिन की सहायता से चित्रानुसार लगाये जाते हैं। ऊपर के चार्ट पेपर को एक साइड से तिकोन आकार में काट लेते हैं एवं नीचे के गोल पेपर में इसी तिकोन आकार के दस भाग करके प्रत्येक अंक का पहाड़ा लिख दिया जाता है। ऊपर के पेपर में उसी अंक को बड़े आकार में लिख देते हैं जिस अंक का पहाड़ा नीचे के पेपर में लिखा होता है।

प्रयोग विधि– TLM का प्रयोग एकदम आसान है। ऊपर के गोल चार्ट पेपर को एक–एक खाने घुमाकर नीचे लिखे पहाड़े का अभ्यास कराया जाता है।

पूजा सचान,
सहायक अध्यापक,
English Medium
Primary School Maseni,
Block-Barhpur,
District-FARRUKHABAD

LCM TLM

कक्षा : 5

विषय : गणित

प्रकरणः लघुतम समापवर्त्य

अब्दुर्रहमान (सहायक अध्यापक)
प्राथमिक विद्यालय ठटरा– प्रथम
सेवापुरी, वाराणसी

English Medium Diary

English Medium School : Blessings in disguise

You can, you should,and if you're brave enough to start ,you will.

- Stephen King

Government tried to address the growing aspirations of the middle class ,has open new school in districts where English is the medium of instruction and not just a subject taught from class 1. it's serving to arrest the outflow of students from Government schools to private English medium instructional schools.

CHALLENGES:

English medium education system is one that uses English as the primary medium of instruction particularly where English is not the mother tongue of the students . The teacher and students also have various challenges associated with using English as a medium of instruction especially due to local language or mother tongue influences

(a) In context of students

- problem of early exposure
- problem of understanding teachers or the text books
- Inappropriate materials and methodology
- Under resources

(b) In context of teachers

- Language skills for local students
- Lack of effective pedagogy
- Frequent code switching between mother tongue and English
- Limited resources
- Inadequate training of teachers
- Lack of textbooks
- Diversity of student's learning style

CHHAVI AGRAWAL
P.S.BANPURWAN
BLOCK : KASHI VIDYAPEETH,
VARANASI

Remedies to overcome challenges

(a) At teacher's level

- Group based interaction with their peers should be promoted
- Apply individualreinforcement strategies
- Working on vocabulary enrichment
- Practicing creative bilingual approach
- Create classroom conditions that foster learning by modelling, scaffolding

(b) At government level

- Short term training programmes, Bridge courses and content specific training program module need to be developed for teachers
- Every 3 years a certification program for teaching English may be offered to refresh teachers skills of teaching and for proficiency in English
- Enrichment of these schools with technology promoting Modi's vision of digital classroom
- Text book should be made interesting more colourful and activity based
- More efficient monitoring and management support systems
- Recruitment rules for English medium schools need to be reviewed as the teacher has to teach all the subjects.

Howver the rapid spread of English Medium School does not imply immediate success.

Implimentation is fraught with "difficulties and challenges" yet we are determined to bring change in education system to fulfill the gap between rural and urban children.

शिक्षण गतिविधि

नये भारत का निर्माण

गतिविधि विवरणः–

पूर्व की तैयारीः–सर्वप्रथम खुरपी की सहायता से विद्यालय प्रांगढ़ में भारत का मानचित्र बनाएं, फिर इसे स्थायी रूप देने के लिए ईंट लगाएं तथा मानचित्र के अंदर के भूभाग की खुरपी से गोड़ाई करें। फिर तिरंगे रंग से पूरे भारत के नक्शे को स्वयं रंगें।

मुख्य गतिविधिः–

भारत के 29 राज्यों (केंद्र शासित छोड़कर) को दफ्ती में डंडी की सहायता से उनकी राजधानी के विवरण सहित तैयार करें। प्रत्येक बच्चे को एक–एक राज्य का मुख्यमंत्री बनाते हुए उन बच्चों द्वारा उस राज्य की तख्ती प्रांगढ़ में बने नक्शे में उनकी उचित जगह बताते हुए लगाने को कहें। प्रत्येक मुख्यमंत्री को अपने राज्य की सीमा के अंदर एक एक छोटा फूल का पौधा लगाने को दें।

चूँकि मुख्यमंत्री का दायित्व होता है कि वो अपने राज्य की सुरक्षा, कानून व्यवस्था एवं विकास करे। अतः सभी बच्चों का ये दायित्व होगा कि वो अपने लगाये पौधे की सुरक्षा एवं उसके विकास में स्वयं मदद करें।

लाभः–

1. बच्चे नक्शे में राज्यों की स्थिति को अच्छी तरह से जानेंगे।
2. जिम्मेदारी का बोध।

दीपनारायण मिश्र
कौशाम्बी

ग्रीन आर्मी का गठन

प्रधानाध्यापिका आसिया फारूकी की अध्यक्षता में प्राथमिक विद्यालय अस्ती नगर–फतेहपुर में ''GREEN ARMY'' का गठन किया गया जिसमें विद्यालय के 7 छात्रों की एक समिति बनायी गयी है जिसे ग्रीन आर्मी नाम दिया गया।

GREEN ARMY का उद्देश्य– शिक्षक एवं छात्रों द्वारा पर्यावरण स्वछता, संरक्षण एवं प्रबंधन हेतु समाज में जागरूकता फैलाना।

GREEN ARMY के कार्य–

1–विद्यालय में वृक्षारोपण एवं रोपित पौधों की देखभाल।

2–विद्यालय में स्वच्छ्ता स्तर उच्चकोटि का होना।

3–विद्यालय के साथ ही प्रत्येक छात्र द्वारा अपने मोहल्ले की सफाई रखना।

4–विद्यालय में वृक्षारोपण के बाद गाँव में भी वृक्ष लगाना।

5–रैली के माध्यम से स्थानीय लोगों को साफ–सफाई एवं पर्यावरण के प्रति जागरूक करना।

6–पॉलीथीन के स्थान पर कपड़े का थैला प्रयोग करने हेतु सभी को जागरूक करना।

7– Reuse, refuse, reduce, recycle का अर्थ एवं प्रयोग सीखना आदि।

आसिया फारूकी
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय अस्ती नगर फतेहपुर।

''बहुत हो गया बंद करो अब,
धरती पर अत्याचारों को
संस्कृति का सम्मान न करते,
भूले शिष्टाचारों को।
आओ!हम सब संकल्प लें...
धरती को हरा बनाएंगे,
ग्रीन आर्मी का यही इरादा..
''पर्यावरण को बचाएँगे।''

सद्विचार

'' 'बा'का जबरदस्त गुण था————सहज ही मुझमें समा जाना। मैं नहीं जानता था कि यह गुण उनमें छिपा हुआ है। जैसे–जैसे मेरा सार्वजनिक जीवन उज्ज्वल बनता गया, वैसे–वैसे 'बा' खिलती गई ।''

महात्मा गांधी जी का ये वक्तव्य 'बा' की ऊर्जस्विता व उनकी दृढसंकल्पिता को व्यक्त करता है। 'कस्तूरबा गांधी' एक ऐसा नाम है जिन्होंने महात्मा गांधी का कंधे से कंधा मिलाकर साथ दिया। 'बा' का जन्म गुजरात के पोरबंदर नगर में 11 अप्रैल 1869 में हुआ था। इनके पिता का नाम गोकुलदास मकनजी व माता का नाम बृजकुवँर था। 'बा' के माता–पिता वैष्णव धर्म को मानने वाले थे। अच्छे संस्कारों की धरोहर तो जैसे उन्हें विरासत में मिली थी। सन् 1883 में तेरह वर्ष की आयु में उनका विवाह मोहनदास करमचंद गांधी जी के साथ हुआ। 'बा' के चार पुत्र हुए———हरिलाल मोहनदास गांधी, मणिलाल मोहनदास गांधी, रामदास गाँधी व देवदास गाँधी। 'बा' को सारी उम्र ये बात कचोटती रही कि काश वह भी बापू की तरह शिक्षित होतीं। यद्यपि बापू ने 'बा' को थोड़ी हिंदी, अंग्रेजी व गुजराती भाषा का ज्ञान करा दिया था। उसके फलस्वरूप वह नियमित रूप से 'वंदे मातरम', 'गुजरात समाचार' जैसे समाचार पत्र पढ़ लिया करतीं थीं। इस प्रकार वह देश में घटी हर घटना के बारे में जान लिया करतीं थीं।

'बा' बहुत ही सीधी, सरल व सहज स्वभाव वालीं महिला थीं। उन्हें हर वह चीज अपनी ओर आकृष्ट करती थी जिससे वह अनजान थीं। वह कैरम और बैडमिंटन देख–देखकर खेलने का प्रयास करतीं थीं। वह कैरम बहुत अच्छी तरह खेलना सीख गयीं थीं। जीतने पर ताली बजाकर बच्चों की भाँति बहुत खुश हुआ करतीं थीं। 'बा' के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता थी————उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति। इस दृढ़ इच्छाशक्ति का उदाहरण दृष्टव्य है।जब महात्मा गाँधी ने 1906 में ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण करने का संकल्प लिया तो 'बा' ने पूरे मनोयोग से बापूजी के संकल्प का निर्वहन कर अपना अप्रतिम योगदान दिया। गाँधी जी ने स्वयं लिखा है————'' ब्रह्मचर्य का गुण मेरी अपेक्षा 'बा' के लिए बहुत ही स्वाभाविक रहा। हम सच्चे मित्रों की तरफ हमेशा एक दूजे के साथ रहे। मित्र बनकर भी वह पत्नी होने के नाते मेरा हर काम करना अपना धर्म समझतीं रहीं। उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण ही मैं उन्हें अपना गुरू मान चुका था। जब बापू अफ्रीका से भारत लौटे तो उन्होंने 25 मई सन् 1915 को साबरमती नदी के किनारे 'सत्याग्रह' नाम का आश्रम बनाया। उसी समय बिहार के चंपारण के किसानों व मजदूरों की दयनीय दशा का पता लगा। 'बा' भी

गाँधी जी के साथ वहाँ पहुँचीं। उन्होंने देखा अंग्रेज किसानों–मजदूरों पर घोर अत्याचार करते हैं। कोई भी अपना मुँह नहीं खोलता है। 'बा' ये सहन न कर सकीं। उन्होंने मजदूर व गरीब महिलाओं की व्यथा–कथा सुनी तो जाना कि किस तरह इन परिवारों की तीन–तीन, चार–चार महिलाओं के बीच मात्र एक धोती पहनने को हुआ करती थी। अक्सर ये धोती जगह–जगह से फटी होती या कभी आधी हुआ करती थी।अतः महिलाएँ अपने ही घरों में कैद रहा करतीं थीं।महिलाओं की ऐसी स्थिति देखकर 'बा' का हृदय चीत्कार कर उठा। हृदय में आक्रोश व्याप्त हो गया। 'देवी स्वरूपा नारी' और ये दुर्दशा.... उन्होंने चंपारण की महिलाओं के अंदर आत्मविश्वास जगाया। उन्हें स्वच्छता का पाठ पढ़ाया। लोगों को घूम–घूमकर सफाई के प्रति जागरूक किया। 'बा' ने अपने हाथ से सूत कातकर कपड़े पहनने की भावनाएँ सबके मन में झंकृत करने का दुष्कर कार्य किया। धीरे–धीरे सभी खादी को अपनाने लगे। वस्त्रों का अभाव दूर होने लगा। नारी शक्ति का सटीक उदहारण रहीं हमारी 'बा'। जब सन् 1922 में गाँधी जी को जेल की सजा सुनाई गई तो पूर देश शोक संतप्त हो गया। 'बा' भी परेशान हुईं किंतु शीघ्र ही देशहित के लिए अपनी भावनाओं पर काबू पा लिया। वह पूरे मनोयोग से बापूजी के अधूरे पड़े कामों को पूरा करने में लगीं रहीं। वह घूम–घूमकर देशवासियों को 'स्वराज' की अलख जगाए रखने के लिए ओजस्वी भाषण देतीं..... उन्हें उत्साहित करतीं थीं। क्या पुरुष... क्या महिलाएँ उनके एक आवाह्न पर नवीन ऊर्जा का संचार कर देश की आजादी के लिए निकल पड़े । स्थान–स्थान पर विदेशी कपड़ों की होली जलाई जाने लगी। घर–घर में चरखा काता जाना अनिवार्य हो गया। 'बा' ने 'स्त्री स्वराज संघ' नामक संस्था की स्थापना की जिसमें हजारों महिलाएं 'बा' के कदम से कदम मिलाकर चलने लगीं और वह काल रात्रि भी आ गई जब एक ज्योति पुंज सारी दुनिया को प्रकाशित कर ब्रह्म में विलीन हो गया। 22 फरवरी सन् 1944 में महाशिवरात्रि पर्व पर वह अनुपम.. अवर्णनीय महाशक्ति शिव में लीन होकर दे गयीं देश की नारी शक्ति को सशक्तिकरण का उदाहरण————

''पुरुषों से कहीं महिलाएँ नहीं हैं कम
आगे ही आगे बढ़ायेंगीं कदम
समझे न कोई हमें फूलों की क्यारियाँ
हम हिंद की हैं नारियां जलती चिंगारियाँ।''

आज भी 'बा' अपनी असाधारण सोच, प्रेम की जीवट मूर्ति व त्यागशीलता का उपमान बनी हुईं सबके हृदयों में विराजमान हैं.... और रहेंगीं। ऐसी महान विभूति को मेरा शत–शत् नमन।

प्रवीणा दीक्षित
हिंदी शिक्षिका
के.जी.बी.वी नगर क्षेत्र
कासगंज।

बाल साहित्य

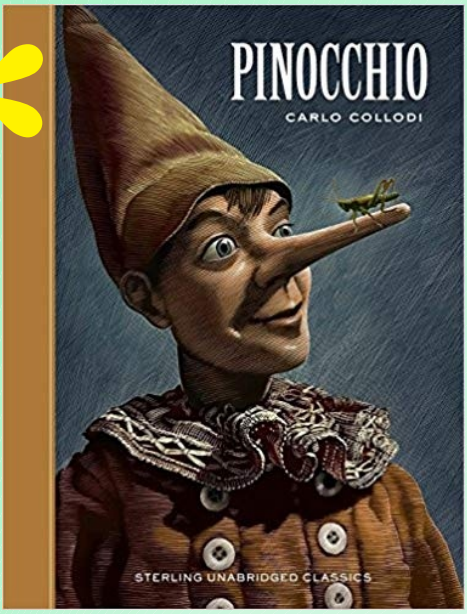

आजकल घर में बच्चों के मनोरंजन के लिए कई साधन प्रचलन में हैं। मसलन टीवी, इंटरनेट, मोबाइल, टैबलेट, लैपटॉप, गेमिंग कंसोल और न जाने क्या–क्या? लेकिन एक जमाने में पुस्तकें ही ज्ञान और मनोरंजन का साधन होती थीं।

आज भी हैं लेकिन पहले ये एकमात्र विकल्प होती थीं। आज कई विकल्पों में से एक। लेकिन कुछ भी कहें इस सदाबहार माध्यम की महत्ता कभी कम न होगी।

बाल साहित्य में आज हम चर्चा करेंगे पिनोकियो की।

पिनोकियो (अंग्रेजी:Pinocchio) एक इतालवी काल्पनिक चरित्र है जिसकी रचना 1883 में कार्लो कोल्लोडी ने की थी। यह पहली बार 1883 में पिनोकियो के कारनामे या द एडवेंचर ऑफ पिनोकियो में अवतरित हुआ था। कथा के अनुसार इसकी रचना एक काष्ठकार गपीतो ने एक छोटे गाँव में चीड़ की लकड़ी से की थी। वास्तव में गपीतो ने तो लकड़ी का एक पुतला मात्र बनाया था लेकिन उस पुतले में जान आ गयी थी। गपीतो ने उस जीवित पुतले को अपनी संतान जैसा प्रेम दिया और पढ़ने के लिए विद्यालय भी भेजा।लेकिन मनमौजी पिनोकियो ने फीस के पैसों से सर्कस देखा और मौजमस्ती की। जब वो मुसीबत में फँस गया तो एक परी ने उसकी सहायता की। पिनोकियो ने अब शरारत न करने का वादा किया। लेकिन अगले दिन उसने फिर से शरारत की। जब परी ने उसे पकड़ लिया तो वो झूठ बोलने लगा। परी ने अपनी जादू की छड़ी घुमायी और पिनोकियो से कहा कि अब अगर वो कभी भी झूठ बोलेगा तो उसकी नाक लम्बी हो जाएगी। बस उसी दिन से पिनोकियो के झूठ पकड़ में आने लगे। वो जैसे ही झूठ बोलता उसकी नाक लम्बी हो जाती। एक समय में उसकी नाक इतनी लम्बी हो गयी कि उसके बोझ के दर्द ने पिनोकियो का जीना मुहाल कर दिया।पिनोकियो ने परी का आवाहन करके कभी भी झूठ न बोलने की कसम खायी तब उसकी नाक सामान्य हो गयी। उसके बाद वो अपने रचनाकार गपीतो के साथ चला गया। एक सुबह जब वो सोकर उठा तो उसने पाया कि वो अब महज एक लकड़ी का पुतला नहीं रह गया था बल्कि एक सामान्य लड़का बन चुका था। ये पिनोकियो की सच्चाई का पुरस्कार था।

पिनोकियो की कहानी दुनिया की सर्वश्रेष्ठ रोचक कहानियों में से एक है। द एडवेंचर ऑफ पिनोकियो का दुनिया की कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। तो क्या आप अपने विद्यार्थियों का परिचय पिनोकियो से करवा रहे हैं। यूट्यूब पर पिनोकियो के कई वीडियोज अपलोडिड हैं। पिनोकियो को जानने का आरम्भ वहाँ से भी किया जा सकता है।

बच्चों का कोना

बहुत जरूरी है

जैसे खाना, जैसे पीना
जीना बहुत जरूरी है।

वैसे रोज सफाई करना
भैया बहुत जरूरी है।

रोज सबेरे समय से जागो
करलो कुल्ला मंजन।

रोज नहाओ साबुन से
तुम स्वच्छ रखो जी तन–मन।।

जैसे खेलना और कूदना
कसरत बहुत जरूरी है।

वैसे ही नित ध्यान लगाकर
पढ़ना बहुत जरूरी है।

पढ़ लिखकर बन जाओगे
तुम अच्छे वाले भैया।

जीवन सुखमय सुखद बनेगा
मिलेगा खूब रुपइया।।

धन का कमाना, संचित करना
जैसे बहुत जरूरी है।

वैसे ही ईमानदारी
भैया बहुत जरुरी है।

राजकुमार शर्मा,
प्रधानाध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय चित्रवार,
विकास खण्ड–मऊ,
जनपद–चित्रकूट।

जमा न हो गंदा पानी

सुनो आंटी सुनो अंकल
सुन लो दादी नानी,
कोशिश हमको ये करनी
जमा न हो गन्दा पानी।।

हैण्डपम्प के पास
जब गंदा जल जाता ठहर,
नीचे जाकर ढहाता वो
पेय पानी पर कहर,
रखो साफ जल स्रोत को
बात ये हर घर बतानी,
कोशिश हमको ये करनी
जमा न हो गंदा पानी।।

पैदा होते इनमे मच्छर
होता डेंगू और मलेरिया,
बीमार होकर कहाँ दिखोगे
बच्चों की अठखेलियाँ,
स्वच्छ भारत हो अपना
हर मुँह पर हो कहानी,
कोशिश हमको ये करनी
जमा न हो गंदा पानी।।

पेयजल बहुत ही कम
करो इसका सीमित उपयोग,
अनमोल रत्न ये प्रकृति का
हो सुरक्षा सबका सहयोग,
नीर है तो जीवन है
है बचपन और जवानी,
कोशिश हमको ये करनी
जमा न हो गन्दा पानी।।

योगेश कुमार,
सहायक अध्यापक,
नंगला काशी
विकास खण्ड–धौलाना,
जनपद–हापुड़।

बच्चों का कोना

"कहानी–बहादुर कुसमा"

कुसमा अपने गाँव के स्कूल में पाँचवीं कक्षा में पढ़ती थी। उसे अपने दोस्तों के साथ पढ़ना–खेलना व खाना बहुत अच्छा लगता था किन्तु वह चाहकर भी नियमित स्कूल नहीं आ पाती थी।उसकी माँ व दादी घर में काम करवाने के कारण उसे रोज स्कूल नहीं भेजते थे। कुसमा को यह सब बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। जब वह स्कूल नहीं जाती तो बहुत दुख होता था।

एक बार तो कुसमा पूरे एक महीने तक स्कूल नहीं आ पायी क्योंकि वह अपने मामा के घर गई थी उसकी मामी बीमार थी तब वह वहाँ घर का काम करती और मन ही मन अपने स्कूल व दोस्तों को बहुत याद करती और रोती थी।

एक महीने बाद जब वह अपने स्कूल पहुँची तो कुसमा की आँखों में आँसू मोतियों की तरह टिम–टिमा रहे थे और वह अपना बस्ता भी साथ नहीं लायी थी। उसके कक्षा शिक्षक सभी बच्चों की तरह उसको भी बहुत प्यार करते थे उन्होंने कुसमा से पूछा..क्या बात है प्यारी कुसमा तुम बहुत दिनों बाद स्कूल आई हो और रो क्यों रही हो तुम्हारा बस्ती भी नहीं है ...कहीं किसी ने तुम्हारा बस्ता छीन तो नहीं लिया?? तो कुसमा ने अपने दुखी मन से कहा– सर जी मेरा बैग मेरी दादी और माँ ने अलमारी में बन्द कर दिया है और मैंने स्कूल आने को कहा तो मुझे बहुत मारा ... उसके शरीर पर डण्डे के निशान साफ झलक रहे थे ...कुसमा के सहपाठियों, दोस्तों को कुसमा के साथ हो रहे अत्याचार का बहुत दुःख हुआ और उन्होंने मिलकर एक एक योजना बनाई ..

सभी बच्चों ने मिलकर चार्ट पेपर से तख्तियाँ बनाईं जिन पर नारे लिखे थे और जोर–जोर से कुसमा के घर के बाहर नारे बोलने लगे ....नहीं सहेंगे अत्याचार ..शिक्षा है सबका अधिकार । कुसमा तुम स्कूल चलो ..हम तुम्हारे साथ हैं। और सभी बच्चे नारे बोलते हुए कुसमा के घर के बाहर बैठ गए बच्चों के नारों की आवाज सुनकर आसपास के सभी लोग वहाँ पर आ गए थोड़ी देर बाद कुसमा की दादी और माँ भी घर के बाहर आ गयीं ....बच्चों ने विनम्रता से कहा यदि आप कुसमा को रोज स्कूल नहीं भेजोगे तो हम यहाँ रोज धरना करेंगे तथा अन्य गाँव के लोगों ने भी बच्चों व कुसमा का साथ दिया और कुसमा के परिवार वालों को समझाया कि शिक्षा के बिना मनुष्य पशु के समान होता है .....तब उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ और सबसे वादा किया कि वे प्रतिदिन कुसमा को स्कूल जरूर भेजेंगे ...और बच्चों ने धरना खत्म कर दिया।अब कुसमा रोज स्कूल जाती है और बहुत खुश रहती है। यह कहानी एक सत्य घटना है।

हरीकान्त शर्मा,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय मुखराई,
मथुरा

शीर्षासन

प्रेरणा मैडम

एक समय की बात है, एक प्यारा सा स्कूल था या यूँ कह सकते हैं कि स्कूल को प्यारा सा बनाया गया था या यूँ कह सकते हैं कि एक घासफूस, गोबर, कूड़े से से घिरे स्कूल को प्यारा सा बनाया गया था। हाँ कुछ ऐसी ही तो कहानी है प्रेरणा मैडम की। प्रेरणा मैडम की नौकरी नयी–नयी लगी थी। उन्हें स्कूल मिला ऐसा जहाँ तक पहुँचना ही अपनेआप में टेढ़ी खीर थी। घर से दो किलोमीटर टैम्पो से जाना, 40 किमी रेल की यात्रा और फिर 5 किलोमीटर तक डग्गामार बस। उबाऊ और कष्टों से भरा सफर था स्कूल का। लेकिन उससे भी अधिक कष्टों से भरा था स्कूल का वातावरण। जब प्रेरणा मैडम पहली बार विद्यालय पहुँचीं तो देखा कि 50 में से 15 बच्चे ही विद्यालय आये थे। विद्यालय के पीछे घूरा पड़ता था तो आगे गोबर का पहाड़ था। बच्चे भी गन्दे–सन्दे आते थे। प्रेरणा मैडम के पास पूरा अवसर था कि वो दिन में दस लोगों से कहें कि हम क्या करें, स्कूल में ऐसी समस्या है, वैसी समस्या है। लेकिन प्रेरणा मैडम उन लोगों में से कहाँ थीं जो परिस्थितियों को दोष देकर अपने उत्तरदायित्व से पीछा छुड़ा लें। वो तो हाथ धोकर समस्याओं के पीछे पड़ जाती हैं।

सेल्फी लेने की शौकीन प्रेरणा मैडम ने पहले ही दिन बच्चों के साथ सेल्फी ली। इसका परिणाम ये हुआ कि अगले ही दिन बच्चों की संख्या बढ़ गयी। प्रेरणा मैडम ने इसका कारण पूछा तो बच्चों ने बताया कि उनकी आज तक किसी ने फोटो नहीं ली और मैडम जी के साथ फोटो खिंचने से उन्हें अच्छा लगा। इसीलिए वो और दोस्तों को भी बुला लाए। बस मैडम को जम गया आईडिया। मैडम ने बच्चों को टास्क देने आरम्भ कर दिए कि सेल्फी उन्हीं के साथ लेंगी जो नहाकर आएगा, पूरी यूनिफॉर्म में होगा, होमवर्क करके लाएगा...... आदि–आदि। बस बच्चों में सकारात्मक परिवर्तन आता गया। गाँववालों को समझाया तो गोबर भी हट गया और घूरे की जगह फूल खिल गये।

मैडम को अपने विद्यार्थियों से ऐसा प्रेम था कि रेल के जनरल डिब्बे में पसीना बहाकर, उबड़–खाबड़ रस्तों और गोबर के पहाड़ों को पार करके भी बच्चों को अब मोबाइल की सेल्फी से आगे ले जाकर डिजिटल इण्डिया का सपना साकार करते हुए लैपटॉप भी ले आयी। अब आपने लैपटॉप के द्वारा नयी–नयी जानकारी देने का बीड़ा उठा लिया। परिणाम ये हुआ कि इस जादू के बक्से के मोह में विद्यालय में बच्चे बढ़ने लगे। जब मुआ 15 इंच का लैपटॉप छोटा पड़ने लगा तो अपने कमरदर्द का ऑपरेशन टालकर प्रोजेक्टर भी ले आयीं। प्रोजेक्टर से 15 इंची स्क्रीन 12 गुना फैलकर 6 फुटी हुई तो शिक्षा 24 गुना फैल गयी। अड़ोस–पड़ोस ही नहीं बल्कि कोस–कोस तक प्रेरणा मैडम के चर्चे हो गये। ये बात ईर्ष्या मैडम को पची नहीं तो पत्रकारों को कर दी झूठी शिकायत कि

मैडम स्कूल नहीं आती हैं,
प्रोजेक्टर भी नहीं लाती हैं।
नवाचार बस एक दिखावा है,
प्रेरणा कर रही एक छलावा है।

पत्रकार महोदय भी आलस की दुकान थे। मसालेदार खबरों की तो पड़ताल भी नहीं करते थे। बिना विद्यालय गये ही ईर्ष्या मैडम की कही बातें छाप दी। अब तो अधिकारी से लेकर साथी नवाचारी उन्हें शक की निगाह से देखने लगे। कार्यवाही के लिए फाइलें तैयार होने ही लगी थीं कि प्रेरणा मैडम के सेल्फी प्रेम ने उन्हें बचा लिया और उससे भी अधिक बचाया उस सेटिंग ने जिसमें फोटो पर समय और दिनांक लिखे आते हैं। अधिकारियों के स्पष्टीकरण माँगने से पहले ही मैडम ने उन फोटोज का प्रसारण सोशल मीडिया पर कर दिया। अब पत्रकार बन्धु पर लानतें पड़ने लगीं तो मैडम जी, मैडम जी करते शरणागत हो गये। कोमल मन की प्रेरणा मैडम ने भी उन्हें क्षमा करते हुए कहा कि लगता है जिस दिन तुम्हारे शिक्षकों ने सच्चाई और मेहनत का पाठ पढ़ाया होगा उस दिन क्लास बंक करी होगी, वर्ना ऐसा नहीं करते। बिना प्रोजेक्टर, बिना कम्प्यूटर प्रेरणा मैडम का कथन पत्रकार के लिए जीवन भर की सीख बन चुका था। ईर्ष्या मैडम आज भी नयी चालें खोज रही हैं लेकिन प्रेरणा मैडम बच्चों के लिए नवाचार सोच रही हैं। प्रेरणा मैडम के स्कूल में फूल हैं, फूल से बच्चे हैं और उन फूलों की मासूमियत प्रतिदिन मैडम की सेल्फी में अंकित होती है।

प्रान्जल सक्सेना

माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट

एक सरकारी स्कूल का अध्यापक

मैं एक सरकारी स्कूल का अध्यापक हूँ इसलिए समाज में निंदा का विषय हूँ। कामचोर, लापरवाह, निकम्मा, फ्री का वेतन लेने वाला और न जाने क्या–क्या लोग कहते हैं पीठ पीछे मुझे। सच ही तो है, जब कलुआ कभी किताब न पढ़ पाया तो कलुआ के मास्टर की इज्जत भी क्यों की जाए? सरकारी अध्यापक की आलोचना और निंदा मैं हृदय से स्वीकार करता हूँ।

वास्तव में मैं कभी भी अपने छात्रों को समाज के शैक्षिक मानक के लायक बना ही नहीं पाया पर अब मैं उन्हें मानक लायक बनाना भी नहीं चाहता हूँ। मैं तो केवल उनके खिलखिलाते चेहरे देखकर ही खुश हूँ। मैं अब स्कूल पढ़ाने जाता ही नहीं हूँ, मैं तो उनके साथ जीवन के सबसे खूबसूरत पल जीने जाता हूँ।

एक रोज कर्त्तव्य पूरा करने के उद्देश्य से मैंने कक्षा 6 के नितेश को डाँट दिया। उसके बाद अगले तीन दिन वह विद्यालय नहीं आया। बच्चों से कहा कि उसके पापा से मेरी खबर कर दो कि मैंने स्कूल बुलाया है तो बच्चे खूब जोर से हँसे ''उसके पापा तो बिल्कुल कबाड़ी हैं, क्वार्टर पी कर पड़े रहते हैं और सबको गाली देते हैं।'' तो मम्मी से कहना, बच्चे फिर मुस्कराये ''मम्मी चली गयी 3 साल पहले घर छोड़कर।''तो खाना कौन बनाता है? मैंने प्रश्न किया, ''बूढ़ी अइया हैं पर वह बीमार रहती हैं, सुबह का खाना नितेश खुद बनाता है शाम को उसके पापा।'' बच्चों की बात सुनकर मन अपराध बोध से भर गया। अगले दिन उसके घर जा धमका एक कोने में 20–25 किलो की दुबली–पतली बीमार अइया चारपाई पर पड़ी थी, बाहर के कमरे से शराब की बदबू आ रही थी। पिता खुद को संयमित कर बच्चे को भेजने का वादा कर रहे थे नितेश एक कोने में डरा सहमा खड़ा था और मैं निःशब्द था।

उस रोज से मैंने नितेश को डाँटना छोड़ दिया। उसका दिमाग पढ़ने में अच्छा है पर मन बहुत चंचल हैं मैं जब ब्लैक बोर्ड की तरफ मुड़ता वो बगल के लड़के के साथ खेलने लगता। अक्सर छुट्टी में बस्ता अंदर के कमरे में छुपा जाता जब होमवर्क की पूछता तो उसकी आँख में आँसू आ जाते। मैं पारिवारिक परिस्थितियों के कारण सख्ती नहीं कर पाता। कई बार बिना नहाये स्कूल आ जाता। उसके बालों का घोंसला मुझे चिढ़ाता और मेरी आवाज ऊँची हो जाती, फिर याद आता कि इसने सुबह खाना आदि का अपना काम खुद ही निपटाया होगा इसलिए भूल गया होगा। दो–चार बार अपने कंघे से बाल संवार दिए तो शर्मा गया अब सजकर आता है।

नितेश एकलौता नहीं है जिसके साथ गंभीर परिस्थितियाँ हों। मेरे स्कूल में हर बच्चे की एक कहानी है और मेरे स्कूल में ही क्यों सब सरकारी स्कूल में है बस आप उनसे जुड़कर जानना तो चाहें। सरस्वती की माँ एक वर्ष से बिस्तर पर ही है। मैं जब भी उसे लेने गया तो उसकी माँ चारपाई पर ही मिली। सरस्वती रात में अक्सर शादियों में पूड़ी बेलने जाती है इसलिए स्कूल में कम ही आती है। माँ कतई शिष्ट नहीं है, कई बार समझाने की कोशिश की, पर कहती है कि स्कूल जाएगी तो घर का काम कौन करेगा। सच ही तो है चार भाई–बहिन और माता–पिता के साथ खाना बनाना और झाड़ू पोंछा तो उसे ही करना पड़ता है। लक्ष्मी मलिन बस्ती में रहती है स्कूल नहीं आती है अक्सर सुअर लेकर 9 बजे स्कूल के सामने से निकलती है बच्चे जोर से चिल्लाकर बताते हैं मास्साब लक्ष्मी जा रही है। मैं दौड़कर उसे रोक लेता हूँ, वो निगाह झुकाकर सड़क को नाखून से कुरेदने लगती हैं, बात करने पर पता चला कि पिता दिल्ली चला गया है घर सुअर पालन से ही चलता है। बमुश्किल दो बहनों में एक को राजी कर पाया स्कूल आने को पर वह कुछ दिन बाद अपनी जीजी के घर चली गयी। जुलाई में भी बच्चों के बस्ते में लिखने को कॉपियाँ नहीं हैं बच्चे कहते हैं पापा को पैसे मिलेंगे तब लाएँगे। मुझे पता है बच्चे सच कह रहे हैं। बस्ते में रंग नहीं हैं इसलिए कला की कॉपी अक्सर बेरंग ही रहती है।

मैं अक्सर अनुपस्थित बच्चों की खोज में गाँव चला जाता हूँ। गाँव में जगह जगह जुएं के फड़ लगे मिलते हैं जहाँ वार्तालाप में शब्द कम गालियाँ ज्यादा निकलती हैं। किशोर बच्चे अक्सर अम्बेडकर बगिया में मोबाइल चलाते मिलते हैं। ज्यादातर पढ़ाई छोड़ चुके हैं मेरे पढ़ाये पूर्व छात्र मुझे आता देख दाएँ–बाएँ निकल लेते हैं उन्हें डर रहता है कि कहीं मैं उनकी पढ़ाई पर कुछ पूछ न लूँ। मुझे देखकर गाँव के लोगों के चेहरे पर उपहास नजर आता है ''काहे पीछे पड़े हो मास्टर, ये नाही पढिहें इनके बप्पा को दारू से फुरसत मिले तब तो स्कूल भेजें'' मैं मुस्कराता हुआ वहाँ से गुजर जाता हूँ। हाउसहोल्ड सर्वे में पता चलता कि सभी जिम्मेदार नागरिकों के बच्चे तो मांटेसरी में हैं और जो अत्यधिक गरीब हैं जिनके पिता को शराब जुएं आदि की लत है उनके बच्चे हमारी जिम्मेदारी हैं। मैं जानता हूँ कि अगर वह सरकारी स्कूल न आये तो उनके जीवन में कभी स्कूल की खुशी नहीं मिलेगी।

भले ही वह सप्ताह में कुछ रोज ही आएँ पर आएँ जरूर। जब स्कूल आएँगे तभी उन्हें मैं रोक सकूँगा कुछ बता सकूँगा।

बच्चों को कठिन रासायनिक सूत्र समझ नहीं आते हैं, उन्हें गणित भी ज्यादा समझ नहीं आती। अंग्रेजी की किताब खोलते ही कक्षा में शांति छा जाती है। बच्चे स्लो लर्नर हैं कक्षा 6 के बच्चों को वर्णमाला के साथ शुरुआत करनी होती है। किताबें उनके लिए अभी महत्वहीन हैं। जब तक गिनती पहाड़े आदि सीख पाते हैं तब तक छमाही परीक्षा आ चुकी होती है। उन्हें फेल नहीं करना है, इसलिए नहीं कि सरकारी नियम हैं, इसलिए कि फेल करने के बाद भी उनके माता पिता पर कोई फर्क नहीं पड़ता है। मुझे पता है कि बच्चे फेल होंगे तो गाँव में आवारागर्दी करेंगे और बुरी आदतें सीखेंगे या कहीं काम धंधा खोजेंगे इसलिए मैं उन्हें स्कूल ही बनाये रखना जरूरी समझता हूँ। अधिकांशतः रेगुलर पढ़ाई के साथ ही स्कूल की उपस्थिति कम होने लगती है, फिर पता चलता कि बच्चे कोर्स पूछे जाने और होमवर्क के भय से गायब हो रहे हैं। उन्हें तो मस्ती करने और खेलने में मजा आता है। मैं पढ़ाने की बजाय खेल के घंटे फिर से बढ़ा देता हूँ और गायब बच्चे फिर स्कूल आ जाते हैं। मैं क्लास में पढ़ाने की जगह अक्सर उनसे घंटो बतियाता हूँ। प्रेरक कहानियाँ सुनाता हूँ उन्हें विज्ञान की दुनिया के कल्पना लोक में ले जाता हूँ। बच्चों से उनके घर परिवार और गाँव की बातें करता हूँ और बच्चे चहक–चहककर एक–दूसरे की पोल खोल देते हैं। ऐसी–ऐसी बातें सामने आती हैं कि बच्चों की स्थिति के बारे में सोचकर वेदना से मन तड़प उठता है। पारिवारिक परिस्थितियाँ इतनी गंभीर हैं कि लगता है भारत अभी भी विकास की प्रारंभिक अवस्था मे ही है। बच्चों के घर जाओ तो बच्चों की जीवनस्तर को देखकर कलेजा मुँह को आ जाता है। मुझे मालूम है कि इनका नाम स्कूल में जबरदस्ती लिखा गया है, ऐसे में खुशनुमा माहौल दिए बिना इन्हें रोक पाना कठिन है। मुझे यह भी पता है कि आज तक इनके घर मे कभी पढ़ाई के बारे में नहीं पूछा गया है। मुझे उनके घर देखकर यह भी अनुमान लग गया है कि फसल के समय मजदूरी करना इनके जीवन की जरूरत है इसलिए फसली समय पर मैं इन्हें अक्सर रोकता नहीं हूँ।

इंटरवल में बच्चे जी भरकर खेलना चाहते हैं कभी–कभी खेल का यह घंटा मैं छुट्टी तक खत्म नहीं होने देता। गर्मी में पसीने से लथपथ बच्चों के चेहरे पर खेल पाने की खुशी बड़ा सुकून देती है क्योंकि बैट बल्ला केवल स्कूल में ही उपलब्ध है। गाँव में तो बच्चे कंचा, पिलिया और जुआ खेलते हैं। मैं अब बच्चों को विषय नहीं पढ़ाना चाहता मुझे मालूम है कि उनके जीवन मे कठिन पढ़ाई से ज्यादा जरूरी सामान्य अक्षर ज्ञान और लोकाचार सीखना है। मुझे पता है कि मैं उन्हें खुशियाँ नहीं दे सकता हूँ और न ही उनके परिवार की आर्थिक मदद कर सकता हूँ पर उन्हें 6 घंटे उनके बच्चों को खिलखिलाकर हँसने का अवसर देना तो मेरे हाथ में है। मेरे बच्चों को कहानियाँ सुनकर अच्छा लगता है, उन्हें स्कूल में क्यारियाँ बनाना, पौधे लगाना और उनकी देखभाल करना पसंद है। लड़कियों को सैतन्ना और गुच्च खेलते देखना अदभुत है। लड़के जब क्रिकेट खेल रहे होते हैं तो क्लास के कोने में पढ़ाई के डर से दुबके रहने बाले सबसे कमजोर लड़के बॉबी की आक्रामकता देखते बनती है।

मुझे मालूम है कि जब मीडिया, पत्रकार ,खंड शिक्षा अधिकारी और बड़े अफसर विद्यालय आएँगे तो शैक्षिक गुणवत्ता मूल्यांकन में मुझे शून्य अंक मिलना तय है। पर अब मैं निश्चय कर चुका हूँ कि कठिन पाठ्यक्रम को सिखाने की बजाय घोर अभाव में जी रहे इन बच्चों को खुलकर खिलखिलाने के अवसर देने के लिए सभी प्रयास कररूँगा। समय के साथ वह किताब पढ़ना, गिनती, ओलम सीखते ही जाएँगे। मैं चाहता हूँ कि जब वह इस विद्यालय से जाएँ तब तक एक अच्छे इंसान बन जाएँ जिनमें सामुदायिक सहभागिता की भावना हो, जो प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम हों, जो शालीन, शिष्ट और आज्ञाकारी हों, जो भले बुरे का निर्णय ले सकते हों, जिन्हें सामान्य जीवन व्यवहार की जानकारी हो और अगर यह मैं कर पाया तो मुझे सन्तुष्टि होगी कि मैंने अपने अध्यापक होने के कर्तव्य को पूरा किया है।

आप मुझे गालियाँ दे सकते हैं पर मुझे खुशी है कि मैं प्राइमरी का मास्टर हूँ और अपने छात्रों को जीवन जीने की कला सिखा रहा हूँ।

अवनीन्द्र सिंह जादौन,
इटावा

http://shikshansamvad.blogspot.com/2018/08/blog-post_7.html

माह का मिशन

एक शिक्षक, एक कक्ष
(One Teacher, One Class room)

मित्रों शिक्षक एक ऐसा शब्द है जो सदैव निर्माण करता है। समाज में अन्य लोग भी एक से बढ़कर एक निर्माता और बुद्धिजीवी होते हैं जो सुई से लेकर जहाज तक का निर्माण बड़ी ही कुशलता से करते हैं। लेकिन इन सभी का कुशल निर्माण जहाँ और जिसके द्वारा होता है वह स्थान है विद्यालय और उसका कक्षा–कक्ष तथा शिक्षक। अतः यह निश्चित है कि यदि एक शिक्षक का कक्षा–कक्ष सकारात्मक ऊर्जा का केन्द्र है तो निश्चित ही वहाँ अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के जीवन में सकारात्मक ऊर्जा और ज्ञान का संचार होगा। जो भविष्य के नागरिक और राष्ट्र निर्माता बन कर तैयार होंगे। इसलिए निर्माण की बात करें तो शिक्षक सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण निर्माता होता है। जिसके निर्माण का स्थान होता है एक कक्षा–कक्ष।

अब प्रश्न उठता है कि एक शिक्षक की कक्षा–कक्ष प्रेरक, आकर्षक और सकारात्मक ऊर्जा का केन्द्र बने कैसे???

आप लोगों ने आज कल एक बहुप्रचारित छोटा सा वाक्य सुना होगा ''गोद लेना'' वैसे यह बहुत ही जिम्मेदारी पूर्ण वाक्य था लेकिन आप को पता है कि आज यह किस तरह अर्थहीनता की उदासी की ओर लगातार बढ़ रहा है। जहाँ ''गोद लेना'' का मतलब अब उसका पालन पोषण की जगह स्वयं को सम्मानित महसूस करना और प्रचारित करना होता जा रहा है। ऐसे में हम शिक्षकों पर दोहरी जिम्मेदारी बढ़ गयी है एक तो ''गोद लेना'' वाक्य के अर्थ को बचाना तथा बचाकर उसे समाज, शासन और सरकार को सफल प्रयोग के रूप में कर दिखाना। गोद लेना कोई साधारण काम भी नहीं है क्योंकि इसके पालन के लिए तन, मन और धन की आवश्यकता होती है। अब एक शिक्षक के रूप में हम सबका तन और मन विद्यालय और विद्यार्थियों में रहता है तथा धन के रूप में वेतन के अतिरिक्त आय के अन्य साधन होते नहीं हैं। ऐसे में हम सब ''गोद लेना'' वाक्य के अर्थ और उपयोगिता को बचाने के लिए अपने विद्यालय में ही विद्यार्थियों के सहयोग से एक कक्षा–कक्ष को गोद ले सकते हैं। यदि एक शिक्षक अपने विद्यालय का एक कक्षा–कक्ष गोद ले कर उसे आकर्षक और सुन्दर सुसज्जित बना लेता है। तो उसे एक साथ कई लाभ भी प्राप्त हो सकते हैं।

1–कक्षा सुन्दर और आकर्षक बनेगी।
2– आकर्षक कक्षा–कक्ष में पढ़ने– पढ़ाने का आकर्षक और सकारात्मक वातावरण तैयार होगा।
3– विद्यालय में आने वाले अतिथि और अभिभावकों पर विद्यालय और आपके कार्यों का प्रभाव व विश्वास बढ़ेगा।
4– ''गोद लेना'' का अर्थ क्या होता है इसे समाज, शासन और सरकार को स्वयं करके दिखाने और बताने का गौरव प्राप्त करेंगे।
5– बच्चों का सर्वांगीण विकास कर राष्ट्रसेवा का लाभ सम्पूर्ण देश को प्रदान कर सकेंगे।

अतः सभी शिक्षक साथियों से मिशन शिक्षण संवाद परिवार की ओर से निवेदन किया जाता है कि आप अपने विद्यालय को आकर्षक और सुन्दर बनाने के साथ शिक्षा के उत्थान और शिक्षक के सम्मान के आधार को मजबूत करने के लिए अपने विद्यालय का एक कक्षा–कक्ष को गोद लेकर उसे सुन्दर और आकर्षक रंग–रोगन, टी०एल०एम० और फ्लेक्स आदि से सुसज्जित करें। हम सबका यह छोटा सा प्रयास बेसिक शिक्षा में परिवर्तन के संकल्प का मील का पत्थर साबित हो सकता है।

आशा है आप सभी इस अभियान में आगे आकर अपने गोद लिए कक्षा–कक्ष की पहले और बाद की तुलनात्मक फोटो बच्चों के साथ हमें मिशन शिक्षण संवाद के वाट्सअप नम्बर–9458278429 पर अवश्य भेजेंगे।

कस्तूरबा विशेष

बालिकाओं को घर से दूर स्कूल न भेजने का समाज में व्याप्त डर और वर्ष में कई महीने अभिभावकों का पलायन हमारे देश की बेटियों को अशिक्षित रहने के लिए मजबूर करता है।

गाँवों में एक बहुत बड़ा हिस्सा ऐसी ही बालिकाओं से भरा हुआ है। जिनके माता–पिता अपनी बेटी की पढ़ाई कक्षा 4–5 के बाद छुड़वा देते हैं। कारण अनेक हैं, परंतु सबसे बड़ा कारण सुरक्षा और उनका पलायन ही है।

बेटियाँ सुरक्षित रहें और पढ़ाई के अलावा सामाजिक, नैतिक कर्त्तव्यों के साथ जीवन कौशल के गुणों में पारंगत हो सकें, माता–पिता कहीं भी जाकर कमायें, खायें पर बेटी को लेकर उन्हें कोई फिक्र न रहे, आज इसी उद्देश्य की पूर्ति कस्तूरबा विद्यालय पूरे मनोयोग के साथ कर रहे हैं।

सरकार की मंशा के अनुरूप 10 से 14 वर्ष की आयु वर्ग की कोई बालिका किसी कारण अशिक्षित न रह जाए इसके लिए जनपद के प्रत्येक विकास क्षेत्र में एक–एक कस्तूरबा विद्यालय निर्मित किए गए जिसमें ऐसी बालिकाओं का प्रवेश सीधे तौर पर लिया जाता है जिन्होंने अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी या कभी विद्यालय जाने का मौका ही नहीं मिला।

कस्तूरबा विद्यालयों में ऐसी छात्राओं को सुरक्षा के साथ शिक्षा और सर्वांगीण विकास के अनेक प्रकार के गुण विकसित किये जाते हैं कि वह छात्रा जो पहले निरक्षर या अल्प साक्षर थी कक्षा 8 तक आते–आते अल्प या सामान्य थी, से विशेष छात्रा के रूप में पहचान बना लेती है। ये छात्राएँ पढ़ाई के साथ खेल, शैक्षिक प्रतियोगिताओं, कला, संगीत जैसे अनेक विधाओं में अपना परचम फहराने लगती हैं, परन्तु जैसे ही कक्षा 8 उत्तीर्ण होने के उपरान्त छात्रा को उनके अभिभावकों के सुपुर्द कर दिया जाता है वैसे ही उनकी आगे की पढ़ाई पुनः स्थगित होने लगती है।

सरकार ने भी इस बात को स्वीकार किया कि कस्तूरबा स्कूलों की पढ़ी छात्राओं को और आगे की शिक्षा इसी रूप में प्रदान की जाए ताकि उसका पूर्ण बौद्धिक विकास किया जा सके।

इस वर्ष इसी कार्य की इतिश्री कर दी गई। उत्तर प्रदेश के 27 विद्यालयों को उच्चीकृत कर दिया गया है तथा प्रदेश भर के ऐसे कस्तूरबा विद्यालयों को चिन्हित किया जा रहा है जहाँ उच्चीकृत के लिए पर्याप्त जगह उपलब्ध है। जिन्हें अगली वर्ष उच्चीकृत किया जाना तय है।

इस सराहनीय प्रयास से इन छात्राओं का निश्चित तौर पर भविष्य उज्जवल होने जा रहा है। अब ये छात्राएँ इंटरमीडिएट तक की पढ़ाई बिना किसी रुकावट के कर पाएँगी। इसके बाद इन छात्राओं से अपने परिवार की जिम्मेदारी और नौकरी पाने की संभावनाओं पर आस लगायी जा सकती है।

हम कह सकते हैं कि इन बेटियों का कल सुखद होने वाला है जल्द ही भारत से निरक्षरता भागने वाली है और नया युग जोकि महिला सशक्तिकरण के लिए जाना जाएगा उनमें कस्तूरबा विद्यालयों की छात्राओं की महती भूमिका होगी। इसी आशा और विश्वास के साथ कि इन बालिकाओं का भविष्य सुखमय हो, घर, परिवार से लेकर देश के विकास में इनकी बराबर की भूमिका हों, ये बेटियाँ देश के निर्माण व उत्थान में बढ़–चढ़कर योगदान दें।

इन्ही मंगल कामनाओं के साथ .....

नीलम यादव,
कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय
महराजगंज, जनपद आजमगढ़ (उ०प्र०)

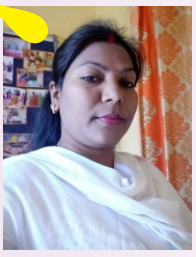

पूर्व माध्यमिक विद्यालय में शिक्षिकाओ की भूमिका– (बालिकाओं के संदर्भ में विशेष)

बेसिक शिक्षा परिषद के पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में विषयगत क्षमताओं के विकास के साथ–साथ उनमें संचार एंव नेतृत्व क्षमता का विकास किया जाना अत्यंत आवश्यक है। जिससे वह अपने परिवेश से निकलकर समाज में अपनी भूमिका को पहचान सकें, समन्वय कर, सहज बन सशक्तिकरण के साथ आगे बढ़ सकें।

पूर्व माध्यमिक विद्यालय में शिक्षिका होने के नाते मैंने यह अनुभव किया है कि छात्राओं में विभिन्न कौशलों का विकास करते हुए उन्हें दूरदर्शिता, आत्मविश्वास के साथ एक अच्छे लक्ष्य के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

आत्मविश्वास से परिपूर्ण बालिका अपनी क्षमताओं के साथ लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम होती हैं। वो अपनी दुनिया बदलने के लिए दृढ़तापूर्वक आगे बढती जाती हैं।

छात्राओं में अभिव्यक्ति, क्रमबद्धता तार्किकता, कल्पनाशीलता, सृजनात्मकता, प्रोत्साहन आदि जीवन कौशलों को एक सुगमकर्ता के रूप में हम शिक्षिकाएँ बखूबी विकसित कर सकती हैं। छात्राओं को लक्ष्य प्राप्त करने और किसी सपने को साकार करने के लिए खुद को अपने पूरे क्रियाकलाप को संगठित करने हेतु हमारा मार्गदर्शन, अवलोकन अत्यंत आवश्यक है। यदि छात्राओं को सकारात्मक वातावरण में समस्याओं से लड़ने के अवसर मिलें तो उनके अंदर नेतृत्व और निर्णय क्षमता का विकास होगा।

विद्यालयों में संचालित मीना मंच एक ऐसा सार्थक मंच बनकर उभरा है जिसने छात्राओं, सुगमकर्ता और शिक्षिकाओं के बीच समस्यायों को बेहतर ढंग से सुलझाने, समझने का आधार दिया है।

मीना मंच एवं नारी चौपाल दोनों ही कार्यक्रमों में शिक्षिकाओं के माध्यम से छात्राओं में विभिन्न कौशलों का विकास और बेहतर व्यक्तित्व निर्माण का अवसर उपलब्ध है। पूर्व माध्यमिक विद्यालय में इस तरह के कार्यक्रमों से 'लिंगभेद' की समस्या को प्रारंभिक स्तर से दूर करने का प्रयास कर जागरूक किया जा सकता हैं।

छात्र–छात्राओं से कुछ विषयों पर संवाद आवश्यक है जैसे– पारिवारिक स्थितियों, संगत और आस–पास होने वाले परिवर्तन, रीति रिवाज, खान–पान, रहन–सहन आदि विषयवस्तु पर विस्तृत चर्चा करना अत्याधिक आवश्यक है।

सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में मल्टीमीडिया, इंटरनेट का उचित उपयोग और उचित–अनुचित की जानकारी भी छात्राओं को होना आवश्यक है साथ ही उनमें दायित्व बोध की भावना भी विकसित होती रहेगी।

पूर्व माध्यमिक विद्यालय की शिक्षिका होने के नाते यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि हम शिक्षक सुगमकर्ता बनने के साथ–साथ एक अच्छा मित्र बनकर इस आयु वर्ग के छात्र–छात्राओं को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ भावनात्मक बल प्रदान करें।

बालिकाओं के लिए विशेष– –

मैं बनाऊँगी आदर्श, विकसित देश
मुझे खुले आसमान में उड़ने दो।
मुझसे दूर रखो रूढ़िवादी विद्वेष,
मुझे अरमानो को पूरा करने दो।

श्रीमती मीना पुष्कर ,
इंचार्ज प्रधानाध्यापिका,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय
खेरागढ़, आगरा।

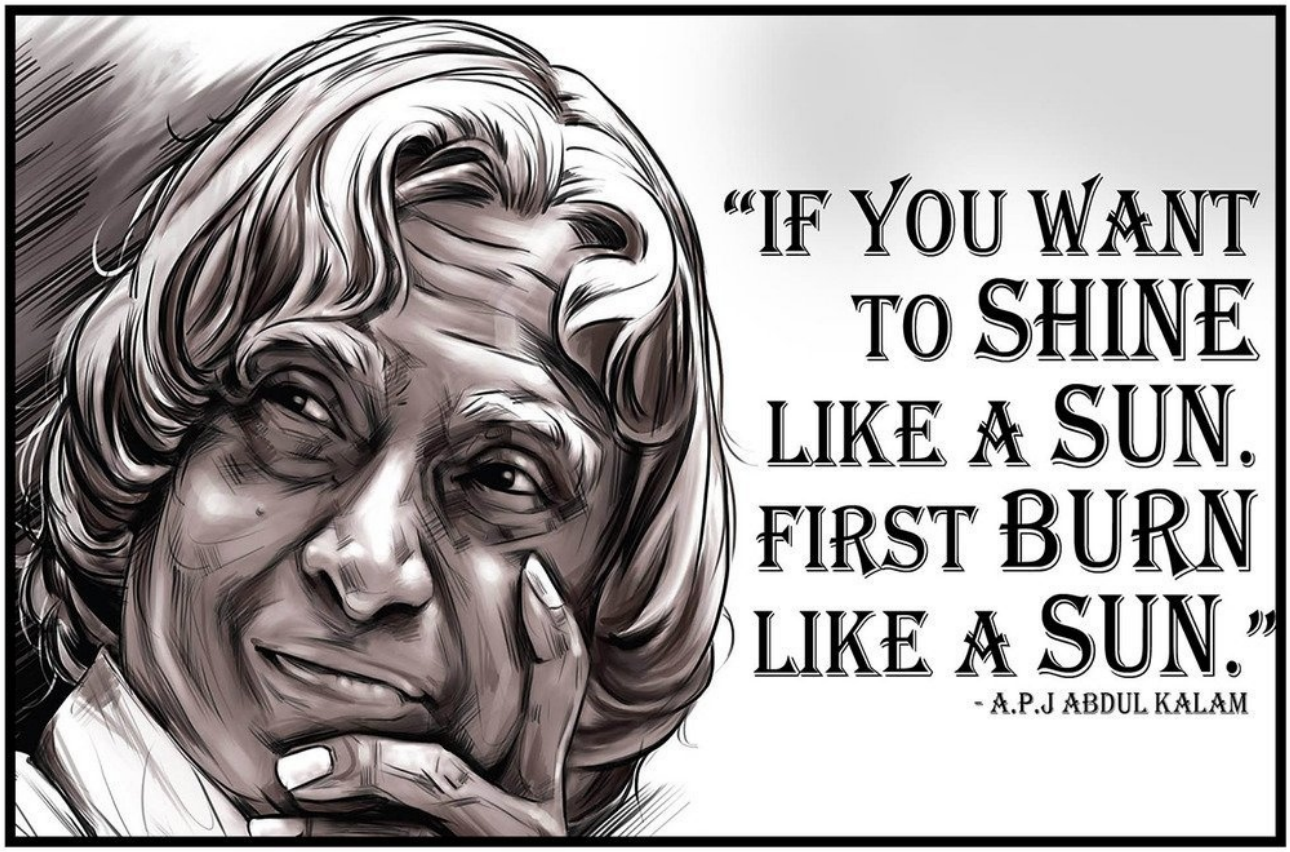

सामान्य ज्ञान

1. राष्ट्रीय रक्षा अकादमी किस शहर मे स्थित है?
उत्तर – देहरादून

2. रामकृष्ण मिशन की स्थापना करने वाले कौन थे?
उत्तर – स्वामी विवेकानंद

3. भारतीय मानक समय किस पर आधारित है?
उत्तर – 80° 30′ पूर्व देशान्तर पर

4. भारत के सबसे पूर्वी भाग पर कौन सा राज्य स्थित है?
उत्तर – अरुणाचल प्रदेश

5. नाथुला दर्रा के पार कौन सा देश है?
उत्तर – चीन

6. पृथ्वी के पास वायुमण्डल की सबसे निचली परत कौन सी है?
उत्तर – क्षोभ मण्डल

7. भारतीय सेना में 'विजयंत' नाम से कौन जाना जाता है ?
उत्तर – एक टैंक

8. चीनी यात्री फाह्यान किस काल में भारत आया?
उत्तर – विक्रमादित्य

9. चाय उत्पादन के लिए कौन सा राज्य जाना जाता है?
उत्तर – असम

10. सबसे ज्यादा चावल उत्पादन भारत के किस राज्य में होता है ?
उत्तर – पश्चिम बंगाल

11. जंतर–मंतर किस शहर में स्थित है?
उत्तर – दिल्ली

12. दार्जिलिंग किस राज्य में स्थित है?
उत्तर – पश्चिम बंगाल

13. तेलगू किस राज्य की राजभाषा है?
उत्तर – आंध्रप्रदेश

14. हॉकी खेल की प्रत्येक टीम में कितने खिलाड़ी होते हैं ?
उत्तर – 11

15. बांग्लादेश मे कौन सी मुद्रा चलती है ?
उत्तर – टका

16. किस सभ्यता का विकास नील नदी के किनारे हुआ था?
उत्तर – मिश्र सभ्यता

17. महात्मा बुद्ध ने किस स्थान पर ज्ञान प्राप्त किया था?
उत्तर – बोध गया, बिहार

18. प्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञान शकुंतलम के लेखक थे?
उत्तर – महाकवि कालिदास

19. ज्वार सबसे ऊँचा किस समय होता है?
उत्तर – जब सूर्य और चन्द्रमा पृथ्वी के एक ही ओर होते है।

20. कौन सा राज्य भारत के वृहद प्रायद्वीपीय पठार का भाग नही है?
उत्तर – मध्य प्रदेश

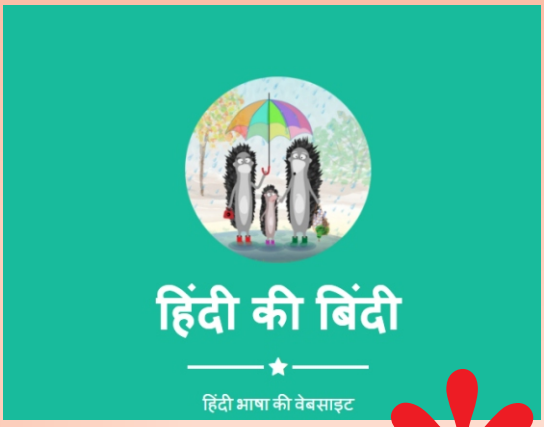

परम्परागत शिक्षण से हटकर बच्चे कविता, कहानी, प्रेरक प्रसंग, रोचक समाचार, सामान्य ज्ञान आदि को बड़ी रुचि के साथ सुनते हैं। पर हमारे पास इन सबका ज्ञान सीमित होता है नित नयी चीजों के लिए हम इन्टरनेट पर ऐसी चीजे खोजते रहते हैं। पर अक्सर हम उस जगह तक नही पहुंच पाते जो सिर्फ बच्चों के लिए ही हो।

शिक्षण तकनीकी में हम इस बार बात करेंगे एक ऐसी ही वेबसाइट की जिसमें बच्चों के मनोरंजन का भरपूर खजाना है। www.hindikibindi.com एक ऐसी ही वेबसाइट है जो बच्चों के मनोरंजन को ध्यान में रखकर बनाई गई है। इसमें न सिर्फ छोटे बच्चों बल्कि हर आयु वर्ग के बच्चों के लिए बहुत कुछ है। तो आप सब भी देखें इस वेबसाइट को और अपने कक्षा शिक्षण को रोचक और मनोरंजक बनायें।

सितम्बर माह के महत्वपूर्ण दिवस

5 सितम्बर – सर्वपल्ली राधाकृष्णन जन्मदिवस/शिक्षक दिवस – S. Radhakrishnan Birthday/Teacher's day

8 सितम्बर – अन्तराष्ट्रीय साक्षरता दिवस – World Literacy Day

14 सितम्बर – हिन्दी दिवस – Hindi Day

15 सितम्बर – संचायिका दिवस

21 सितम्बर – विश्व शांति दिवस – World Peace Day

27 सितम्बर – विश्व पर्यटन दिवस – World Tourism Day

भारतीय संस्कृति में योग

प्राचीन काल से ही योग को हमारी संस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, योग भारतीय जीवन–पद्धति का अहम हिस्सा होने के साथ–साथ जीवन जीने का विज्ञान है और यह एक सम्पूर्ण चिकित्सा पद्धति है योग स्वयं की शक्तियों से परिचय कराकर हमें समस्त समस्याओं को सामना करने की शक्ति प्रदान करता है।

योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'युज' धातु से हुई है, जिसका अर्थ होता है 'जोड़ना।' अर्थात आत्मा का परमात्मा से मिलन ही योग है। पाणिनी व्याकरण के अनुसार 'योग' शब्द व के तीन अर्थ हैं मिलन (युजिर्योगे), समाधि (युज समाधौ) एवं संयम (युज संयमने)।

योग की मुख्य परिभाषाएँ निम्न हैं–

गीता में योग की परिभाषा–

योगःकर्मसु कौशलम् (2–50) किसी भी कार्य को कुशलतापूर्वक करना ही योग है।

समत्वं योग उच्यते(2–48) योग हमें हर परिस्थिति में समान रहने की क्षमता प्रदान करता है।

महर्षि पातंजलि के योग दर्शन में योगश्चितवृत्ति निरोधः (1–2) चित्त की वृत्तियों का निरोध हो जाना ही योग है ।

श्रीराम शर्मा आचार्य जी के अनुसार "जीवन जीने कला का नाम ही योग है।"

योग शरीर का मरोड़ना एवं खींचना ही नहीं है बल्कि यह आपको एक पूर्ण जीवन शैली सिखाता है। यह मन और आत्मा के बीच सामंजस्य स्थापित करने में सहायक है। योग एक ऐसी विद्या है जिसके मदद से आप शरीर और मन को पूर्ण रूप से स्वस्थ रख सकते हैं। योग सिर्फ आपको बीमारियों से ही नहीं बचाता बल्कि शारीरिक और मानसिक स्तर पर तालमेल बैठाता है। योग हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करते हुए हमारी जीवन को एक नयी दिशा दिखाता है। यह शरीर को लचीला बनाने में सहायक है और मन को शांत करते हुए तनाव, चिंता, गुस्सा आदि व्याधियों से बचाता है।

योग के इतिहास के बारे में विभिन्न मत हैं, लेकिन ऐसा माना जाता है कि योग के उपदेशक आचार्य हिरण्यगर्भ हैं एवं उनसे पुरातन अन्य कोई नहीं है। यहाँ आचार्य हिरण्यगर्भ कहने से आशय सृष्टिकर्ता ब्रह्मा से लगाया जाता है।

ब्रह्मा ने यह ज्ञान सनकादिकों और विवस्वान (सूर्य) को दिया। बाद में यह दो शाखाओं में विभक्त हो गया। एक ब्रह्मयोग और दूसरा कर्मयोग। ब्रह्मयोग की परम्परा सनक, सनन्दन, सनातन, कपिल ने शुरू की थी। यह ब्रह्मयोग लोगों के बीच में ज्ञान, अध्यात्म और सांख्य योग नाम से प्रसिद्ध हुआ। दूसरी कर्मयोग की परम्परा विवस्वान(सूर्य) की है। विवस्वान ने मनु को,

मनु ने इक्ष्वाकु को, इक्ष्वाकु ने राजर्षियों एवं प्रजाओं को योग का उपदेश दिया। उक्त सभी बातों का वेद और पुराणों में उल्लेख मिलता है। वेद को संसार की प्रथम पुस्तक माना जाता है जिसका उत्पत्ति काल लगभग 10000 वर्ष पूर्व का माना जाता है। पुरातत्ववेत्ताओं के अनुसार योग की उत्पत्ति 5000 ई.पू. में हुई। गुरु–शिष्य परम्परा के द्वारा योग का ज्ञान परम्परागत तौर पर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को मिलता रहा।

भारतीय योग जानकारों के अनुसार योग की उत्पत्ति भारत में लगभग 5000 वर्ष से भी अधिक समय पहले हुई थी। योग की सबसे आश्चर्यजनक खोज 1920 के शुरुआत में हुई। 1920 में पुरातत्व वैज्ञानिकों ने 'सिंधु सरस्वती सभ्यता' को खोजा था जिसमें प्राचीन हिंदू धर्म और योग की परंपरा होने के सबूत मिलते हैं। सिंधु घाटी सभ्यता को 3300–1700 बी.सी.ई. पुराना माना जाता है।

प्रमुख योग ग्रंथ निम्न इस प्रकार हैं– योग सूत्र, वेद, उपनिषद्, भगवद गीता, हठ योग प्रदीपिका, योग दर्शन, शिव संहिता और विभिन्न तंत्र ग्रंथों में योग विद्या का उल्लेख मिलता है। सभी को आधार बनाकर महर्षि पतंजलि ने योग सूत्र लिखा। योग पर लिखा गया सर्वप्रथम सुव्यवस्थित ग्रंथ है– योगसूत्र। योगसूत्र को पांतजलि ने 200 ई. पूर्व लिखा था। इस ग्रंथ पर अब तक हजारों भाष्य लिखे जा चुके हैं।

प्राचीनकाल से ही योग गुरकुल परंपरा का अभिन्न अंग रहा है। योग बच्चों के सम्पूर्ण विकास में सहायक हैं योग से बच्चों का शारीरिक,मानसिक, आध्यात्मिक विकास होता है, बच्चे राष्ट्र की अमूल्य धरोहर हैं। योग बच्चों को प्रतिभावान एवं व्यक्तित्ववान वनाने में सहायक है। प्रत्येक अंक में आपको एक आसन और प्राणायाम वर्णन मिलेगा, जिसका अभ्यास आप स्वयं करें और बच्चों को अवश्य करायें। योग विषय अपने आप में पूर्ण हैं, योग का अभ्यास कराने से बच्चों को लाभ मिलता ही है। साथ ही साथ शिक्षक स्वयं भी लाभान्वित होता है जिससे यह विषय सिखाने में अधिक रूचिकर लगने लगता है।

अंशुल अनंत,
सहायक अध्यापक,
प्रा०वि० मनपुरा,
ब्लॉक–किशनी,
जनपद–मैनपुरी।

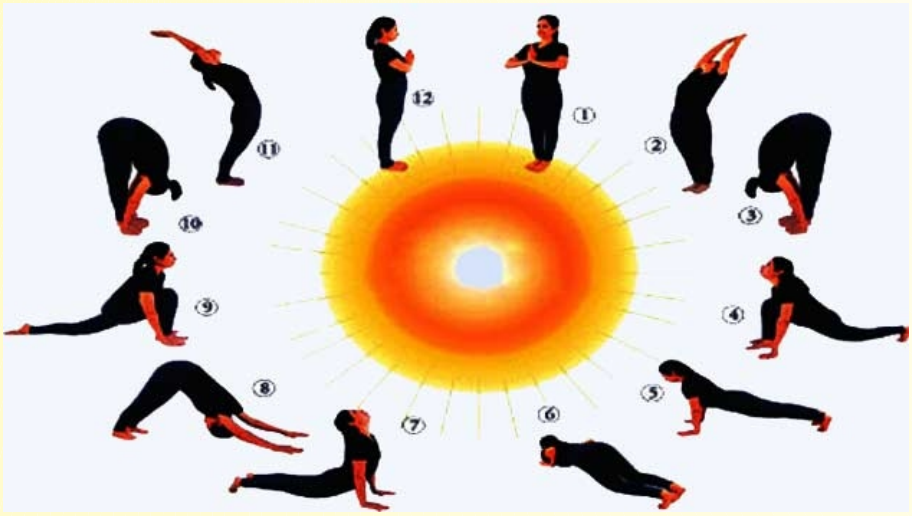

खेल–विशेष

शतरंज का खेल

जैसा कि आप जानते हैं हमारे परिषदीय विद्यालयों में संसाधनों की कमी है। साथ ही साथ हमारे विद्यालय में पढ़ने वाले कुछ बच्चों में शारीरिक और मानसिक रूप से विकास कम दिखता है। शतरंज एक बौद्धिक एवं मनोरंजक खेल है। यह खेल कम संसाधनों एवं कम स्थान में खेला जा सकता है। यह इंडोर गेम है। यह खेल बड़े शहरों में कॉन्वेंट स्कूलों तक सिमटकर रह गया है। वैज्ञानिक तौर पर इस खेल से बच्चों की बौद्धिक क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। परिषदीय विद्यालयों में खेल के विकास के लिए कदम उठाने की जरूरत है। जिससे कि कम खर्च बच्चे अपनी बौद्धिक क्षमता के साथ बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास व्यक्तित्व का विकास हो सके।

शरीर को फिट रखने के लिए बच्चे व्यायाम और खेलकूद का सहारा लेते हैं, लेकिन दिमाग का क्या? उसे भी फिट रखने के लिए व्यायाम की जरूरत पड़ती है। दिमागी कसरत आपके बच्चे के दिमाग की कार्यक्षमता में इजाफा करती है। कहा जाता है कि एक आम इंसान अपने पूरे जीवनकाल में अपना दिमाग कब केवल 5–6% हिस्से का ही उपयोग कर पाता है, इस बात में तथ्यों की कमी हो सकती है, लेकिन इतना जरूर कहा जा सकता है कि यदि अपने बच्चे के दिमाग की कसरत कराते रहें तो वे ज्यादा तेज सोच सकते हैं और अपनी याददाश्त को भी सुधार सकते हैं। बच्चों के दिमागी विकास और उन्हें बुद्धिमान बनाने के लिये बच्चों के साथ छोटे–छोटे दिमागी खेल खेलें। पहले उन्हें विस्तार से खेल का तरीका बताएँ फिर उनके साथ बच्चा बनकर ही खेलें और गलती होने पर उन्हें अवश्य बताएँ।

होने वाले लाभ

1.एकाग्रता एवं फोकस को बढ़ाता है :– शतरंज का खेल खेलने वाले व्यक्ति की एकाग्रता और फोकस करने की क्षमता अन्य की तुलना में बहुत अधिक होती है और यदि यह खेल छोटी उम्र में खेला जाए तो इसके परिणाम चमत्कारिक होते हैं।

2.यह फैसला लेने की क्षमता का विकास करता है ।

3.प्लानिंग, विश्वास, अनुशासन सीखने एवं समय का सही उपयोग करना सीखते हैं।

4.चेस खेलने से गणित और विज्ञान विषयों पर अच्छी पकड़ बनती है ।

5.चेस गहराई से सोचने और खोज करने की प्रवृत्ति को बढ़ाता है।

शतरंज खेलने की लिए एक बोर्ड की आवश्यकता होती है। यह बोर्ड लकड़ी या प्लास्टिक का बना होता है। आकार में वर्गाकार होता है। बोर्ड के ऊपर सफेद–काले रंग के 64 वर्गाकार खाने बने होते हैं। 8 खानों की आठ पक्तियों से 64 खाने बनाए जाते हैं। ये खाने काले के बाद सफेद क्रम से बनाए जाते हैं। इन खानों में ही मोहरे चलाये जाते हैं।

शतरंज का खेल दो खिलाड़ियों द्वारा खेला जाता है प्रत्येक खिलाड़ी के पास 16–16 मोहरे होते हैं। एक के पास काली और दूसरे के पास सफेद। इन मोहरों को अलग–अलग नाम दिए गए होते हैं जैसे– बादशाह, वजीर, ऊँट, हाथी, घोड़ा, पैदल सैनिक। खेल शुरू करने के लिए दोनों खिलाड़ी अपने–अपने मोहरे आमने–सामने बिछा देते हैं।

राजा

शतरंज के खेल में सारी घेराबंदी राजा के लिए ही होती है। राजा समाप्त यानि खेल समाप्त फिर चाहें आपके पास कितने भी मोहरे बचे हों। राजा अपने चारों ओर किसी भी दिशा में केवल एक कदम चल सकता है।

वजीर

बादशाह के बाद वजीर का मोहरा महत्वपूर्ण होता है। यह मोहरा किसी भी दिशा में चल सकता है, लेकिन अनुबंध यह है कि इसकी चाल किसी भी दिशा में सीधी होनी चाहिए इसके रास्ते में यदि विरोधी खिलाड़ी का कोई मोहरा होता है, तो यह उसे मार सकता है।

हाथी

यह मोहरा आगे–पीछे तथा दायें–बायें चल सकता है, लेकिन इस अनुबंध के साथ कि यह आड़ी–तिरछी चाल न चले। हाथी जितने खानों को चाहे पार कर सकता है, बशर्ते कि उसके रास्ते में कोई दूसरा मोहरा न हो। शतरंज के चारो कोनों पर ये तैनात किए जाते हैं।

घोड़ा

घोड़ा एक ऐसा मोहरा होता है, जो अपनी चाल केवल ढाई खाने चलता है। इसकी चाल अंग्रेजी के अक्षर एल (L) के आकार की होती है। शतरंज के खेल में केवल घोड़ा ही ऐसा मोहरा है, जो विरोधी पक्ष से पिटकर छलांग लगाते हुए स्वयं को बचा लेता है।

ऊँट

ऊँट सदा आड़ी–तिरछी चाल चलता है। बोर्ड पर दोनों ऊँट बादशाह तथा वजीर के साथ–साथ खड़े होते हैं, लेकिन इनकी भी कुछ सीमाएँ हैं। काले खाने पर खड़ा ऊँट केवल काले खानों पर ही चल सकता है और सफेद खाने पर खड़ा केवल सफेद खानों पर। ऊँट को यह स्वतंत्रता है कि वह एक साथ कई खाने पार कर सकता है, लेकिन मोहरों के ऊपर से नहीं जा सकता।

प्यादा

शतरंज के खेल में प्यादों की संख्या दोनों ओर 8–8 होती है। इस प्रकार कुल प्यादे 16 होते हैं। प्यादा केवल आगे की ओर ही चल सकता है और एक बार में केवल एक खाना आगे बढ़ सकता है, लेकिन इसका इतना अधिकार अवश्य है कि यह विरोधी के मोहरों पर आड़ा–तिरछा वार कर सकता है। अपने इस अभियान में यदि वह विरोधी के छोर पर पहुँच जाता है, तो बादशाह को छोड़कर कोई भी मोहरा ले सकता है।

उमेश सिंह
बलिया

मिशन–उपस्थिति

बेसिक के सरकारी विद्यालयों में पायी जाने वाली सबसे प्रमुख समस्या छात्र उपस्थिति के प्रतिशत को लेकर बनी रहती है। जहाँ प्राइवेट विद्यालयों में उपस्थिति 80% से अधिक हमेशा बनी रहती है वहीं बेसिक के विद्यालयों में यह घटकर औसतन 50 से 60% रह जाती है क्या कारण है कि बेसिक में इतनी कम उपस्थिति रहती है। साथ ही वे कौन सी राहे हैं, जिन पर चलकर छात्र उपस्थिति को 80% से अधिक पाया जा सकता है। इन समस्त तथ्यों पर विचार करने के लिए प्रदेश के विभिन्न जनपदों से ऐसे विद्यालयों के अनुभवों को साझा किया जा रहा है, जिन्होंने न स्वयं राहें बनायीं बल्कि उन राहों पर चलकर अपने विद्यालय की औसत उपस्थिति 80% से अधिक बनाए रखी। इस पर स्वयं ना कहकर उनके अनुभवों को उन्हीं के शब्दों में आपके समक्ष रखा जा रहा है।

मनोज कुमार सिंह, प्रधानाध्यापक
प्राथमिक विद्यालय सैरागोपालपुर पिण्डरा वाराणसी

मेरे द्वारा अपने विद्यालय में नामांकन, उपस्थिति व ठहराव के निम्न प्रयास किये गये:–

1–सर्वप्रथम विद्यालय का बाह्य वातावरण परिवर्तित किया। जैसे–आकर्षक रंग रोगन, बाह्य व आन्तरिक कक्षों में शैक्षिक चित्रांकन, चहारदीवारी के निर्माण के साथ–साथ उसे भी चित्रांकित कराया।

2–बच्चों को पब्लिक स्कूलों जैसी सुविधा मुहैया करायी। जैसे–टाई बेल्ट, आईकार्ड, डायरी व आकर्षक सीबीएसई की पाठ्य पुस्तकें।

3–गणतंत्र दिवस समारोह पर गाँव के प्रबुद्ध व गणमान्य नागरिकों के साथ–साथ अभिभावकों को बुलवाया, कार्यक्रम का समस्त संचालन प्रतिभाग का कार्य बच्चों से कराया। संचालन अंग्रेजी में हुआ।

4–परिसर में व्याप्त गंदगी को स्वयं साफ करना शुरू किया जिसमें बच्चों, अध्यापकों व सफाई कर्मी का सहयोग मिला।

5–खराब शौचालय को बनवाकर दो भाग में बाँटा। बालकध्बालिका शौचालय दोनों को अलग–अलग कर साफ सुथरा व आकर्षक बनाया।

6–बाल संसद का गठन कर शैक्षिक अनुशासन, स्वच्छता, एमडीएम, खेलकूद, सांस्कृतिक आदि की जिम्मेदारियों को बच्चों को सौंप दिया।

7–अध्यापकों द्वारा सभी अभिभावकों का नंबर एक डायरी में रखा गया जैसे ही कोई छात्र अनुपस्थित होता तुरंत फोन कर बुलवाया जाता।

8–समय–समय पर अभिभावकों की बैठक में अनुपस्थित बच्चों का जिक्र कर सहयोग माँगना तथा बाल संसद के पदाधिकारियों द्वारा भी अनुपस्थित छात्रों को विद्यालय भेजने का आग्रह करना व अगर बच्चे को किसी कारणवश कुछ विलंब हो जाय तो भी स्कूल भेजने का आग्रह करना।

9–ग्राम प्रधान, बीडीसी व कोटेदार के माध्यम से अनुरोध करना।

10–स्वयं संबन्धित कक्षाध्यापक के साथ बच्चे के घर जाकर बुलाना।

11–बाल संसद के पदाधिकारियों द्वारा संबन्धित अनुपस्थित छात्र के अभिभावकों के नाम पत्र लिखकर उन्हें विद्यालय भेजने का आग्रह करना।

13–बच्चों को विद्यालय में सम्मान प्रदान करना।

14–अच्छी उपस्थिति पर बच्चों व अभिभावकों दोनों को सम्मानित करना।

15–समय–समय पर खेलकूद सांस्कृतिक कार्यक्रम, क्विज, चित्रकला, निबंध प्रतियोगिता और कहानी किस्सा सुनना सुनवाना और पुरस्कृत करना।

16–सबसे मुख्य सभी अध्यापकों का समय से विद्यालय आना पूरे समय विद्यालय में रहकर मनोयोग से अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करना तथा सभी कार्यक्रमों में पूर्णतः भाग लेना तथा बच्चों के साथ बच्चा बनकर उन्हें प्रोत्साहित करना।

उक्त सभी कारकों के साथ विद्यालय का छात्र नामांकन लगभग दुगुना होना, बच्चों में ठहराव आना तथा उपस्थिति में अच्छी प्रगति हुई।

क्रमशः अगले अंक में.....

विनोद कुमार
भदोही

टीचर्स–क्लब कॉर्नर

टीमवर्क टीचर्स क्लब के तत्वाधान में जनपद के आधा सैकड़ा परिषदीय प्राथमिक और पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में पॉलिथीन प्रतिबंध और पॉलिथीन के नुकसान पर जागरूकता अभियान चलाया गया। विभिन्न विद्यालयों में प्रार्थना सभा और अंतिम पीरियड में छात्रों को उत्तर प्रदेश सरकार के नए निर्णय से अवगत कराते हुए अध्यापकों ने छात्रों को बताया कि दिनांक 15 जुलाई से 50 माइक्रोन से कम मोटाई की पॉलिथीन बंद हो गयी है और इसके इस्तेमाल पर जुर्माना और जेल का प्राविधान है इसलिए सभी छात्र अपने अपने माता–पिता को बाजार कपड़े का थैला ले जाने का आग्रह करें साथ ही अगर वह बाजार जाएं तो दुकानदार को भी पॉलिथीन में समान देने से मना कर दें। अध्यापकों ने बताया कि अगर कोई बाजार से पॉलिथीन में सामान लाते मिलता है तो उस पर कानूनी कार्यवाही हो सकती है। टीचर्स क्लब के महामंत्री अवनीन्द्र जादौन ने बताया कि जागरूकता अभियान के दौरान प्राथमिक विद्यालय नगला नगोली बढ़पुरा में प्लास्टिक उपयोग न करने के विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित कराई गई वहीं प्राथमिक और पूर्व माध्यमिक विद्यालय बलैयापुर जसवंतनगर, प्राथमिक और पूर्व माध्यमिक विद्यालय कैलोखर जसवंतनगर, प्राथमिक विद्यालय नगला मोती भरथना प्राथमिक विद्यालय सहसारपुर सैफई, प्राथमिक विद्यालय जवाहरपुरा बढ़पुरा , प्राथमिक विद्यालय निवि चकरनगर, यूपीएस प्रतापनेर बढ़पुरा, प्राथमिक विद्यालय नगला नया जसवंतनगर, प्राथमिक विद्यालय बनामई भरथना, प्राथमिक विद्यालय पुरामुरोंग बढ़पुरा के छात्रों को पॉलिथीन निर्माण के दौरान निकलने बाली जहरीली गैसों, पॉलिथीन अपघटन में लगने बाले समय आदि के बारे में विस्तार से बताया गया और उन्हें अब पॉलिथीन की जगह कपड़े के थैले के इस्तेमाल की शपथ दिलाई गई।

4 दैनिक जागरण कानपुर, 18 जुलाई 2018 — इटावा जागरण

बच्चों ने कपड़े के थैले इस्तेमाल करने की ली शपथ, प्लास्टिक उपयोग न करने पर पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित हुई

टीचर्स क्लब ने स्कूलों में बताए पॉलीथिन के नुकसान

जहां से ली वहीं पॉलीथिन वापस करें व्यापारी : डीएम

रेडक्रास ने चलाया जागरुकता अभियान

शहर न रहे मैला, घर से लेकर चलो थैला

टीचर्स क्लब ने प्राथमिक और पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों को जागरूक किया। अमर उजाला। (बाएं से दाएं)

इटावा। टीचर्स क्लब के तत्वावधान में जनपद के 50 परिषदीय प्राथमिक और पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में पॉलिथीन प्रतिबंध और नुकसान पर जागरूकता अभियान चलाया गया। विभिन्न विद्यालयों में प्रार्थना सभा और अंतिम पीरियड में शहर न रहे मैला, घर से लेकर चलो थैला जैसे स्लोगन के साथ जागरूक किया।

अध्यापकों ने छात्रों को प्रदेश सरकार के नए निर्णय से बताया कि 15 जुलाई से 50 माइक्रोन से कम मोटाई की पॉलिथीन बंद हो गई है। इसके इस्तेमाल पर जुर्माना और जेल का प्रावधान है। इसलिए सभी छात्र अपने अपने माता पिता को बाजार कपड़े का थैला ले जाने का आग्रह करें। साथ ही अगर वह बाजार जाएं तो दुकानदार को भी पॉलिथीन में समान देने से मना कर दें। अध्यापकों ने बताया कि अगर कोई बाजार से पॉलिथीन में सामान लाते मिलता है तो उस पर कानूनी कार्रवाई हो सकती है। टीचर्स क्लब के महामंत्री अवनींद्र जादौन ने बताया कि जागरूकता अभियान के दौरान प्राथमिक विद्यालय नगला नगोली बढ़पुरा में प्लास्टिक उपयोग न करने के विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित कराई गई। ब्यूरो

CHART CODE-G004 — An initiative of

मिशन शिक्षण संवाद, उ०प्र० — शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान

TEACHER शिक्षक के एक-एक अक्षर का मतलब

T- Tactful	(व्यवहार-कुशल)
E-Efficient	(कार्य-कुशल)
A- Active	(सक्रियबद्ध)
C-Confident	(आत्मविश्वासी)
H-Honest	(ईमानदार)
E-Excellant	(उत्कृष्ट)
R- Regular	(नियमित)

⋆ शिक्षक TEACHER का अर्थ ⋆

शि. शिखर तक ले जाने वाला
क्ष. क्षमा की भावना रखने वाला
क. कमजोरी को दूर करने वाला

अर्थात्
जो विद्यार्थी की हर गलती को क्षमा करने की भावना रखता है और उसकी हर कमजोरी को दूर कर उसको शिखर (सफलता) तक ले जाता है वही सच्चा शिक्षक कहलाता है।

संकलन एवं डिजाइन: टीम मिशन शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद

सितम्बर 2018

सितम्बर 2018					
रवि.	2	9	16	23	30
सोम.	3	10	17	24	
मंगल.	4	11	18	25	
बुध.	5	12	19	26	
गुरु.	6	13	20	27	
शुक्र.	7	14	21	28	
शनि.	1	8	15	22	29

पर्व व त्यौहार

सितम्बर

03 सोम. जन्माष्टमी

21 शुक्र. मोहर्रम

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर—9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1-फेसबुक पेज: https://m.facebook.com/shikshansamvad/

2- फेसबुक समूह: https://www.facebook.com/groups/1180108654646 49/

3- मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग : https://www.shikshansamvad.blogspot.in

4-Twitter(@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad

5-यू-ट्यूब: https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig

6— व्हाट्सएप नं0 : 9458278429

7— ई मेल : shikshansamvad@gmail.com

8— वेबसाइट : www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात